R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में
विज्ञापन बुक कराने हेतु
सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

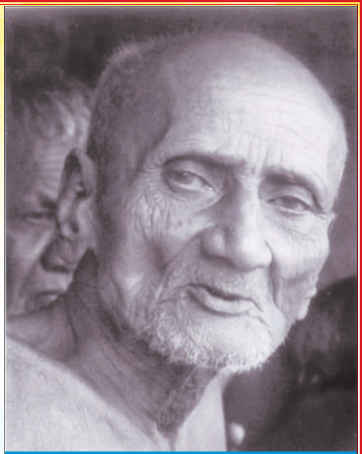
बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

महासभा की प्रबंधकारिणी की बैठक सम्पन्न — पृष्ठ 03 पर...

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 16 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 09 फरवरी 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha — jaingazette2@gmail.com

अपने अस्तित्व की रक्षा का, यह पावन अभियान। जैन जनगणना जागृति, बने समाज की पहचान।।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के तत्वावधान में जैन जनगणना जागृति अभियान का भव्य शुभारम्भ

पुनीत जैन, दिल्ली

राष्ट्र संत परम्पराचार्य 108 श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज, पूज्य श्री अजित मुनि जी महाराज एवं पूज्य श्री अमित मुनि जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य, प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के तत्वावधान में जैन समाज के चारों सम्प्रदायों के विशिष्टजनों की गरिमामयी उपस्थिति में जैन जनगणना जागृति अभियान

शेष पृष्ठ 08 पर.......

WONDERFUL EUROPE 12 Nights / 13 Days
8 Nov यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
PARIS, SWITZERLAND, ITALY
AUSTRALIA 9 Nights / 10 Days
21 Jan 13 Feb 7 Mar
आस्ट्रेलिया जैन मंदिर के दर्शन
Melbourne, Sydney, Gold Coast, Brisbane
AMERICA (USA) 12 Nights / 13 Days
Dep in 2026 अमेरिका जैन मंदिर के दर्शन
Niagara Falls, San Francisco, New Jersey
New York, Los Angeles, Las Vegas, Washington
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
100% Pure Vegetarian Jain Food
ला: नेमचन्द जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

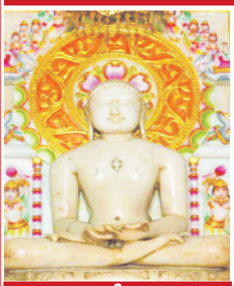
869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

JK MASALE SINCE 1957

Buy online on
jkcart.com
— Breakfast Matlab —
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

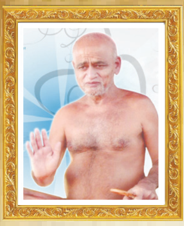

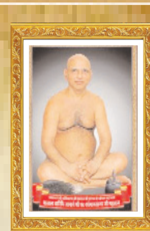

हमारी प्रेरणा स्रोत

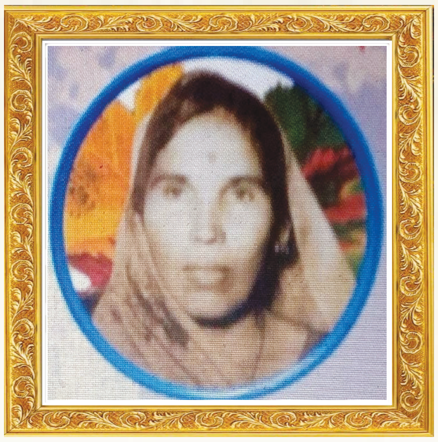

परम श्रद्धेय ममतामयी माँ

स्व. श्रीमती कनकमाला जैन

(स्वर्गवास 12-2-2003)

धर्म पत्नी स्व. श्री नेमीचंद जी जैन बड़जात्या (पूर्व सरपंच) उगरियावास वाले की 23वीं पुण्य तिथि 12-2-2026 पर हम सभी परिवार जन विनम्र भावभीनी श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं। पुण्यात्मा को कोटिशः शत् शत् नमन

"मीठी मधुर स्मृतियां आपकी कभी नहीं मिट पायेंगी। आपकी कर्म शीलता, आपके आदर्श एवम् आपकी सादगी सदैव हमें याद आयेगी"

– : श्रद्धावनत :–

समस्त बड़जात्या परिवार (उगरियावास वाले) दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)

दि. 14-2-2026 को शादी की नवीं वैवाहिक वर्षगांठ पर

हार्दिक शुभकामनाऐं

आपका दाम्पत्य जीवन सदा सुखी रहे

Er. गौरव-राशी जैन

(पुत्र-पुत्रवधु)

दि. 11-2-2026 को शादी की आठवीं वैवाहिक वर्षगांठ पर

हार्दिक शुभकामनाऐं

आपका दाम्पत्य जीवन सदा सुखी रहे

C.A. अंकुर जैन-डॉ. प्रतिभा जैन

(पुत्र-पुत्रवधु)

दिनांक 13-2-2026 को जन्म दिन की बहुत-बहुत हार्दिक

हार्दिक शुभकामनाऐं

आप जियो हजारों, साल साल के दिन हों पचास हजार

गौरव जैन

(पुत्र)

मुनिभक्त एवं प्रसिद्ध समाजसेवी श्री सुरेन्द्र कुमार जैन बड़जात्या, उगरियावास वाले के परिवारजन

– : शुभाकांक्षी :–

समस्त बड़जात्या परिवार (उगरियावास वाले) दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)

➡ आदित्य जैन एण्ड कम्पनी ➡ अंकुर जैन एण्ड एसोसिएट्स

बालाजी टावर, दुर्गापुरा, जयपुर-302018 भारतीय आमजन सोसायटी (रजि.) दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)

मोबा. 9352731323, 9309237133

संकलन - राजाबाबू गोधा, जैन गजट संवाददाता, फागी, जयपुर (राज.) मो. 9460554501

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला
RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com
SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी एवं महिला महासभा) की

प्रथम संयुक्त प्रबंधकारिणी की बैठक सम्पन्न

शनिवार, 31 जनवरी 2026, दोपहर 2:00 बजे स्थान - जैन भवन, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली

अध्यक्षता- राष्ट्रीय अध्यक्ष महासभा - श्री गजराज जैन गंगवाल जी

स्वराज जैन, दिल्ली

बैठक का प्रारंभ मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल, श्री हंसमुख जैन गांधी, श्री प्रकाश जैन बोहरा आदि द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा ने प्रबंधकारिणी की बैठक में उपस्थित सभी महानुभावों का हार्दिक अभिनन्दन व आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभी पदाधिकारियों व सदस्यों से विगत मनोमालिन्य को भूलकर एकजुट होकर महासभा को सुसंगठित एवं बलवती बनाने का अनुरोध किया। सभी कार्यकर्त्ता महासभा के अपने आप में पदाधिकारी हैं, इस भावना व उत्साह से हमें कार्य करना है। महासभा की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण देश-विदेश में हो इसका प्रयास करना चाहिये। महासभा को जन-जन की महासभा बनाने हेतु इसकी सदस्य संख्या का विस्तार करना है। धर्म संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कमल बाबू जैन ने महासभा में युवाओं की भागीदारी पर जोर दिया। उन्होंने महासभा के विधान में यथोचित आवश्यक संशोधन हेतु विधान समिति गठित करने की बात कही। महासभा की सभी इकाइयां मिलकर महासभा को सुदृढ़ करें तथा महासभा के अल्याण हेतु तत्पर रहे हैं।

धर्म संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हंसमुख जैन गांधी ने बैठक को बताया कि सन् 1926 में महासभा का अधिवेशन मथुरा में हुआ था। हमें इस वर्ष उसका शताब्दी समारोह मनाना चाहिए। हमें 2027 की जनगणना हेतु प्रत्येक जैन को जागरूक करना है। जैन गजट को देश के कोने-कोने में पहुंचाना चाहिए। Social Media पर महासभा के कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था करनी चाहिए। तथा महासभा का अधिवेशन देश के विभिन्न प्रदेशों में होना चाहिए।

धर्म संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ललित जैन सरावगी ने कहा कि महासभा को नवीन कार्यप्रणाली व नवीन रीति-रिवाजों से कार्य करना चाहिए। महासभा के सदस्यों की संख्या दो लाख तक करनी चाहिए। महासभा को धार्मिक गतिविधियों के साथ सामाजिक और राजनैतिक कार्य भी करने चाहिए। महासभा में Artificial Intelligence का समुचित उपयोग करना चाहिए। युवा महासभा के श्री विकेश मेहता ने अपने ओजस्वी विचार व्यक्त करते हुये कहा कि जैन राजनैतिक चेतना मंच इतने दिनों से कार्यरत है लेकिन आज लोक सभा में हमारा कोई प्रतिनिधि नहीं है। जनगणना कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु हमें गांव-गांव जाकर जागरुकता अभियान चलाना चाहिये। हम कोमल हैं, लेकिन कायर नहीं। श्री विकेश मेहता जी को युवा महासभा का कार्याध्यक्ष मनोनीत किया गया। जैन राजनैतिक चेतना मंच के राष्ट्रीय महामंत्री श्री ललित जैन ने कहा कि महासभा का अधिवेशन विभिन्न क्षेत्रों में होना चाहिए जिससे महासभा की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार होगा। बेलगांव में जैन समाज के लोगों की संख्या अत्यधिक है। वहां महासभा का अधिवेशन होना चाहिए।

कटनी के पूर्व विधायक श्री सुकीर्ति जैन ने महासभा को गठित करने हेतु जिला व राज्य स्तर पर महासभा के कार्यालय को गठित करने का सुझाव दिया।

श्री सुभाष काला ने महासभा की गतिविधियों में विधायक व सांसद से सम्पर्क बढ़ाने पर जोर दिया। वे मध्य प्रदेश में जनगणना हेतु जैन समाज के लोगों को जागरुक करने का कार्य कर रहे हैं।

श्रुत संवर्धिनी महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री गजेन्द्र पाटनी ने पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि हर प्रदेश में महासभा का कार्यालय प्रारंभ किया जाय और राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय हर पदाधिकारी को उसकी जिम्मेदारी दें।

श्रुत संवर्धिनी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्यामलाल जैन कहा कि दिल्ली में दिगम्बर समाज के करीब 80 मन्दिर हैं। हमें उनके पदाधिकारियों के साथ अलग-अलग ग्रुप में बैठक कर महासभा की गतिविधियों की जानकारी दें। इससे महासभा का प्रचार-प्रसार होगा।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अशोक चुड़ीवाल ने तीर्थ संरक्षिणी के राष्ट्रीय महामंत्री आदरणीय राजकुमार सेठी द्वारा भेजी गई तीर्थ संरक्षिणी महासभा की गतिविधियों और सम्पूर्ण देश में क्षत-विक्षत मन्दिरों के पुनरुद्धार के रिपोर्ट पढ़कर बैठक को सुनाई।

अशोक जी ने तीर्थ संरक्षिणी महासभा के कार्यकर्ता आगामी जनगणना कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सक्रिय रहेंगे, ऐसा विश्वास है। हमारे जैन मंदिरों एवं तीर्थों के कानूनी दस्तावेजों की पूर्ण जानकारी महासभा के पास होनी चाहिए ताकि किसी भी प्रकार के अतिक्रमण या विवाद से हमारे धार्मिक स्थलों की रक्षा हो सके। इसके लिए स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों का सहयोग लिया जाए। हमारे प्राचीन जैन ग्रंथों का डिजिटलीकरण किया जाए ताकि यह अमूल्य धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके। आदरणीय श्री गजराज जी गंगवाल जी ने जैन जनगणना अभियान का जो संकल्प लिया है वह अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक कार्य है। हम सभी को उत्साहपूर्वक आगे आकर इस पुण्य कार्य में सक्रिय सहभागिता निभानी चाहिए। श्री पवन जी ने पर्वतराज शाश्वत क्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी की स्वच्छता अभियान का जो संकल्प लिया है वह अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक कार्य है। हम सभी को उत्साह पूर्वक आगे आकर इस पुण्य कार्य में सक्रिय सहभागिता निभानी चाहिए। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में आगामी जनगणना कार्यक्रम की महत्ता के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आज देश में हमारी जनसंख्या 4 करोड़ के करीब है लेकिन 2011 की जनगणना के सरकारी आंकड़े दोषपूर्ण हैं। आगामी जनगणना फॉर्म के कालम संख्या 7 के धर्म कालम में 6 और जैन शब्द तथा कालम नं. 10 में भाषा कालम 10A में प्राकृत तथा 10B में दूसरी भाषा का उल्लेख करें।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जी ने बैठक को बताया कि देश के विभिन्न प्रदेशों में कई जातियां हैं जो जैन तीर्थंकरों को अपना आराध्य मानते हैं। वे णमोकार मंत्र का पाठ करते हैं। झारखंड, ओडिसा और पश्चिम बंगाल की सीमा पर सराक जाति, पश्चिम बंगाल में पुण्डरा जाति के लाखों लोग हैं जो भगवान आदिनाथ और पार्श्वनाथ भगवान तथा भद्रबाहु की आराधना करते हैं। हमें उनको जैन समाज की मुख्य धारा में लाना है तथा आगामी जनगणना में उनका उल्लेख जैन धर्म में करना है। हमें अपनी सदस्य संख्या का विस्तार करना है। सदस्य संख्या बढ़ाने पर हमें भारत सरकार में समुचित प्रतिनिधित्व मिलेगा। प्रदेशों से प्राप्त सदस्यता शुल्क का 75% प्रतिशत भाग प्रदेश में जनकल्याणकारी कार्यों में खर्च होगा, ऐसी व्यवस्था हमें करनी है। महासभा में युवाओं की भागीदारी बढ़ानी है जिससे हमारी आगामी पीढ़ी महासभा को गति प्रदान करेगी। इस सन्दर्भ में महासभा ने ओजस्वी नेता व प्रखर वक्ता श्री विकेश मेहता को युवा महासभा के कार्यध्यक्ष का दायित्व दिया है। इसी तरह से आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना में महासभा को सुसंगठित करने हेतु श्री संदीप बाकलीवाल तथा झारखंड, श्री संजय पाटनी जैन, असम, श्री मुकेश जैन एड़वोकेट को महासभा का दायित्व प्रदान किया है। महासभा के क्रियाकलापों से संबंधित समाचार आदिनाथ चैनल पर शीघ्र ही प्रतिदिन प्रसारित किये जायेंगे। प्रबंधकारिणी समिति की बैठक में श्री रवि सेन जैन, श्री कमल अजमेरा, श्री प्रमोद जैन, श्री सन्दीप जैन आदि ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

धर्म संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अजीत जैन चांदूवाड़ ने बताया कि गांधीधाम (गुजरात) में सिद्धचक्र महामंडल विधान का भव्य आयोजन श्री धर्मेन्द्र कुमार जी, शालिनी जी लाला परिवार (इंदौर) द्वारा किया गया था। यह आयोजन प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी आदरणीय प्रदीप भैयाजी 'सुरेश' (अशोकनगर), ब्रह्मचारिणी दीदी सविता दीदी (दश प्रतिमाधारी), माया दीदी एवं साधना दीदी के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में अत्यंत आध्यात्मिक, श्रद्धा, भक्ति एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल एवं श्री पवन जैन गोधा सहित महासभा के पदाधिकारियों के निर्देशानुसार श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के

शेष पृष्ठ 08 पर...

यूजीसी कानून के खिलाफसवर्ण समाज द्वारा किए गए आंदोलन में जैन समाज ने भी अपनी भागीदारी निभाई

रविन्द्र काला, संवाददाता, बूंदी

बूंदी, 5 फरवरी। यूजीसी कानून के विरोध में सवर्ण समाज द्वारा 3 फरवरी को जिला कलेक्टर को दिए गए ज्ञापन में बूंदी सकल जैन समाज ने भी विरोध प्रकट किया। सवर्ण समाज द्वारा आजाद पार्क बूंदी से निकाली गई आक्रोश रैली में जैन समाज के लोगों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस कानून के विरोध में सकल जैन समाज के अध्यक्ष एडवोकेट संजय कुमार जैन ने जिला कलेक्टर कार्यालय के बाहर ज्ञापन पढ़कर

सुनाया तथा उनकी अगुवाई में सवर्ण समाज के 21 व्यक्तियों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। यूजीसी कानून के खिलाफ बूंदी खण्डेलवाल सरावगी समाज के पूर्व अध्यक्ष रविन्द्र काला ने अपने शरीर पर बेड़ियां बांधकर विरोध प्रदर्शन किया। वह सवर्ण समाज के अन्य सदस्यों के साथ आजाद पार्क से बेड़ियां बांधकर आक्रोश रैली आगे आगे चल रहे थे। यह आक्रोश रैली आजाद पार्क से प्रारम्भ होकर कोटा रोड़, इंद्रा मार्केट, अहिंसा सर्किल होते हुए जिला कलेक्टर कार्यालय पर पहुंची। इस आक्रोश रैली में सकल जैन समाज के मंत्री महावीर धनोप्या, संरक्षक त्रिलोकचंद जैन, ओमप्रकाश बड़जात्या, प्रवक्ता ओमप्रकाश ठग, खण्डेलवाल सरावगी समाज के अध्यक्ष संतोष पाटनी, मंत्री योगेन्द्र जैन, उपाध्यक्ष सुनील बाकलीवाल, सरावगी समाज के सामाजिक कार्यकर्ता सुरेन्द्र छाबड़ा, नवीन गंगवाल, बघेरवाल समाज से सेवानिवृत्त लेखाकार अनिल जैन, पूर्व तहसीलदार ओमप्रकाश जैन सहित समाज के प्रबुद्धजनों ने इस आक्रोश रैली में भाग लेकर यूजीसी कानून के खिलाफ अपना विरोध प्रदर्शन किया।

साहिल जैन का नाम West Bengal Book of Records में दर्ज

मुर्शिदाबाद (पश्चिम बंगाल)। मुर्शिदाबाद के स्थानीय निवासी साहिल जैन का नाम West Bengal Book of Records में सम्मानित तौर पर दर्ज किया गया है। यह उपलब्धि की लिए दी गई है, जो अपने क्षेत्र में एक अनूठा कीर्तिमान बनाता है। West Bengal Book of Records में नाम दर्ज होना एक प्रतिष्ठित सम्मान है जहाँ राज्य के नागरिकों, छात्रों, कलाकारों, उद्यमियों और अन्य क्षेत्रों के उत्कृष्ट लोगों को उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए मान्यता दी जाती है। इस उपलब्धि से साहिल जैन ना सिर्फ मुर्शिदाबाद बल्कि पूरे पश्चिम बंगाल में गर्व का अनुभव कर रहे हैं। इस बारे में साहिल जैन ने कहा, ''मैं इस सम्मान के लिए अपने परिवार, मित्रों और शुभचिंतकों का धन्यवाद करना चाहता हूँ।

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन्
आचार्य श्री थड़ी मार्केट जैन मन्दिर, मानसरोवर जयपुर में विराजमान हैं।

आचार्य शशांक सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्यश्री शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

स्वभाव की शरण वाले को कभी अशरणता नहीं होती है

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपुर)
श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर जयपुर)
श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
अनिल कुमार पाण्ड्या (बनेठा वाले)
गजेन्द्र बड़जात्या, (कामा वाले) जयपुर

श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोल्या (मारूजी का चौक, जयपुर)
पवन कुमार बड़जात्या मरवा वाले किशनगढ़
अशोक चांदवाड (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
मधु जैन अध्यक्षा-श्री दिग. जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर-3
कमल चंद छाबड़ा अध्यक्ष 1008 श्री शांतिनाथ दिग. जैन मंदिर मान्यवास, मानसरोवर, जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

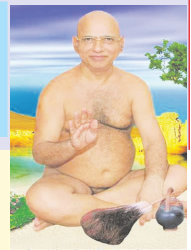

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

Jain Group

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण बैठक 05 फरवरी 2026 को कोलकाता में सम्पन्न

पुनीत जैन, दिल्ली

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं विभिन्न प्रांतों से पधारे प्रतिनिधियों की एक महत्वपूर्ण बैठक कोलकाता में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने की। इस अवसर पर महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा, तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार सेठी जी, तीर्थ उपाध्यक्ष श्री अशोक जैन चूड़ीवाल, धर्म संरक्षिणी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ललित जैन सरावगी सहित अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी एवं समाज के सक्रिय कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बैठक में जैन समाज की वर्तमान स्थिति, संगठनात्मक सुदृढ़ता तथा आगामी जैन जनगणना/जनसंख्या गणना अभियान को लेकर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। सभी पदाधिकारियों ने एक स्वर में इस अभियान को समाज के अस्तित्व, पहचान एवं भविष्य की योजनाओं के लिए अत्यंत आवश्यक बताया। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि जनगणना अभियान को जमीनी स्तर तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने हेतु प्रांत, जिला एवं नगर स्तर पर समितियों का गठन किया जाएगा तथा युवाशक्ति और महिला वर्ग की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही, साधु-संतों, सामाजिक संस्थाओं एवं विभिन्न समजिक मंचों के माध्यम से व्यापक जनजागृति फैलाने पर विशेष बल दिया गया।

धर्म संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा ने कहा कि जैन समाज की एकता, पहचान और भविष्य की सुरक्षा के लिए जैन जनगणना जागृति अभियान अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यह अभियान केवल आँकड़ों का संकलन नहीं, बल्कि समाज को संगठित, जागरूक और सशक्त बनाने का एक व्यापक प्रयास है।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार सेठी जी ने अपने संबोधन में कहा कि जैन समाज की पहचान और आस्था का केंद्र हमारे प्राचीन तीर्थ हैं, जिनका संरक्षण और संवर्धन प्रत्येक जैन का दायित्व है। उन्होंने कहा कि जैन जनगणना जागृति अभियान से समाज की वास्तविक संख्या, भौगोलिक स्थिति और आवश्यकताओं का स्पष्ट चित्र सामने आएगा, जिससे तीर्थों की सुरक्षा, विकास एवं प्रबंधन के लिए ठोस योजनाएँ बनाई जा सकेंगी।

तीर्थ उपाध्यक्ष श्री अशोक जैन चूड़ीवाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जैन तीर्थ केवल पूजा के स्थान नहीं हैं, बल्कि हमारी संस्कृति, इतिहास और आस्था के जीवंत केंद्र हैं। उन्होंने कहा कि जैन जनगणना जागृति अभियान से समाज की वास्तविक स्थिति का आकलन होगा जिससे तीर्थों के संरक्षण, विकास और सुविधाओं के विस्तार के लिए ठोस एवं दीर्घकालिक योजनाएँ बनाई जा सकेंगी। उन्होंने समाज के सभी वर्गों से अपील की कि वे जनगणना अभियान में सक्रिय सहभागिता निभाएँ तथा तीर्थ संरक्षण के कार्यों में भी सहयोग प्रदान करें ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारी धरोहर सुरक्षित रह सकें। उन्होंने समाजजनों से आग्रह किया कि वे जनगणना अभियान में पूर्ण सहयोग दें और तीर्थों से जुड़े विषयों पर भी सजग रहें। साथ ही उन्होंने कहा कि संगठित समाज ही अपने तीर्थों, परंपराओं और संस्कृति की रक्षा प्रभावी ढंग से कर सकता है। उन्होंने सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं समाजजनों से आह्वान किया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय होकर जन-जन तक पहुँचें, लोगों को जनगणना की प्रक्रिया समझाएँ तथा यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक जैन परिवार अपनी सही जानकारी दर्ज कराए। उन्होंने विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं की सहभागिता को अभियान की सफलता की कुंजी बताया।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने सभी पदाधिकारियों से संगठित होकर कार्य करने का आह्वान करते हुए कहा कि एकजुट प्रयासों से ही जैन समाज को सशक्त और संगठित बनाया जा सकता है।

बैठक का समापन सकारात्मक वातावरण एवं समाजहित में ठोस कार्ययोजना के संकल्प के साथ हुआ।

बच्चों के लिए आजीवन भोजन का पुण्यार्जन

दान चिंतामणि अत्ति मब्बे श्री आशारानी जी पांड्या तीर्थोदय तीर्थ गोलाकोट में 100 कमरे के बनने वाले छात्रावास (वर्तमान में खनियांधाना छात्रावास) में बच्चों के लिए आजीवन भोजन का पुण्यार्जन करेंगी। 201 कलश की राशि का फण्ड कमेटी को समर्पित किया। पूर्व में सांगानेर बालिका छात्रावास में भी आपने इसी प्रकार दान दिया था। सम्पूर्ण जैन समाज व गुरुभक्त आपके इस कार्य की बहुत बहुत अनुमोदना करते हैं।

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

अनुसरण होकर हो उसे ही तो स्वभाव कहते हैं

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

कैलाशचंद पाटनी किशनगढ़ (उरसेवा वाले)
इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल, निखार, जयपुर
....
....
....

धर्मचंद पहाड़िया जयपुर राज. केन्द्रीय कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी महासभा
....
....
....
....

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

संपादकीय

वर्तमान परिस्थितियों में षट्कर्मों की समीचीनता

भगवान महावीर ने राष्ट्र और विश्व की समस्याओं के लिए जो समाधान प्रस्तुत किये वे तात्कालिक न होकर सार्वकालिक थे। आज भी उनका वही महत्व है जो उस समय था। श्रावकों के नित प्रतिदिन षट्कर्म - देवपूजा, गुरु उपास्ति, स्वाध्याय, व्रत-संयम, तप और दान का आज भी उतना ही महत्व है जितना महावीर के समय में था।

इन सभी षट्कर्मों को हम भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित 'अहिंसा' में समायित कर सकते हैं। इन सभी षट्कर्मों के करने से व्यक्ति के अन्दर अहिंसा की भावना सुदृढ़ होती है। राष्ट्र की वर्तमान प्रत्येक समस्या और उलझन का समाधान भगवान महावीर द्वारा प्रदर्शित अहिंसा में मौजूद है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इस सत्य को आत्मसात किया था और इसीलिए वे राष्ट्रपिता जैसे गरिमापूर्ण सम्बोधन से अभिहित किए गए। खेद है कि आज स्वयं उनके अनुयायी ही इस सत्य को नहीं समझते। काश! ऐसा हो सके।

विश्व शांति के अवतार भगवान महावीर की जन्म जयन्ती हम प्रत्येक वर्ष मनाते हैं। उनका वैशिष्ट्‌ इसमें नहीं है कि वे वैशाली के एक मूर्धन्य राजघराने में उत्पन्न हुए थे, उनका महत्व इसलिए भी नहीं है कि वे एक उच्चकुल के राजकुमार थे, उनका महत्व इसलिए भी नहीं है कि वे मगध कौशाम्बी व सिन्धु देश के प्रतापी सम्राटों के सगे रिश्तेदार थे। उनका महत्व तो इसमें है कि उन्होंने जातिभेद, वर्गभेद एवं रंगभेद के साथ ही शोषक एवं शोषित के भेद को मानवता का संहारक मानकर उनके विरुद्ध अपना तीव्र नारा लगाया था। उनका सर्वत्र आदर इसलिए बढ़ा कि उन्होंने हिंसा, परिग्रह, अंधविश्वास तथा ऐकान्तिक विचार धाराओं के विरोध के लिए अपना राजसी वैभव ठुकरा दिया। उनके जीवन की इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने पिछड़े वर्गों एवं अल्पसंख्यकों के प्रति अपनी पूर्ण सहानुभूति व्यक्त कर सर्वोदय का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके सर्वोदय का यह संदेश स्वस्थ समाज के निर्माण एवं विश्व-शांति के क्षेत्र में निःसन्देह ही एक साहस भरा क्रान्तिकारी कदम था। उनके इसी गुण ने उन्हें राजकुमार वर्धमान से लोकनायक महावीर बना दिया।

महावीर द्वारा प्रतिपादित श्रावकों के षट् आवश्यकों को भी हम उनके सर्वोदय सिद्धान्त के अंतर्गत रख सकते हैं। क्योंकि एक व्यक्ति अपने जीवन में षट् आवश्यकों का पालन करते हुए ही अपने आपको इतना योग्य बना सकता है कि वह सर्वोदय के सिद्धान्त का प्रचार-प्रसार कर सके।

षट् आवश्यक क्या हैं? इन्हें आवश्यक क्यों कहा जाता है? इनके पालन से एक व्यक्ति में क्या-क्या परिवर्तन आ सकते हैं? वर्तमान परिस्थितियों में इन षट्कर्मों की तथा इनमें कोई बदलाव अपेक्षित है क्या ?

'आवश्यक' शब्द का सामान्य अर्थ है जिसे अवश्य होना चाहिए, जरूरी या सापेक्ष। वश्य उसे कहते हैं जो किसी के अधीन होता है और जो ऐसा नहीं होता उसे अवश्य कहते हैं और उसके कर्मों को आवश्यक कहते हैं। अवश्य करने योग्य जो कोई भी कार्य हो वह आवश्यक शब्द से कहा जाना चाहिए। परन्तु आवश्यक शब्द यहां पारिभाषिक अर्थ में साधु और श्रावक की विशेष क्रियाओं के लिए प्रसिद्ध है -

आचार्य कुन्दकुन्द ने 'नियमसार' में कहा है -

'जो ण हवदि अण्णवसो तस्स दु कम्मं भणति आवासं ।। 141।।

'ण वसो अवसो, अवस्स कम्म वावस्सयं ति बोधव्वा।। 142।।

मूलाचार की गाथा 215 में कहा है कि जो कषाय रागद्वेष आदि के वशीभूत न हो वह अवश है, उस अवश का जो आचरण है वह आवश्यक है।

'अनगार धर्मामृत' में 'आवश्यक' शब्द को परिभाषित करते हुए पण्डित आशाधर जी कहते हैं -

''यद्व्याध्यादिवशेनापि क्रियतेऽक्षावशेन तत। आवश्यकमवश्यस्य कर्मा हो रात्रिकं मुनेः ।।8/16।। अर्थात् रोग आदि से पीड़ित होने पर भी इन्द्रियों के अधीन न होकर मुनि के द्वारा जो दिन रात के कर्तव्य किये जाते हैं, उन्हें आवश्यक कहते हैं। जो 'वश्य' अर्थात् इन्द्रियों के अधीन नहीं होता उसे अवश्य कहते हैं और अवश्य के कर्म को आवश्यक कहते हैं। ''आवासक'' ऐसा शब्द मानकर 'आवासयन्ति रत्नत्रयमपि इति आवश्यकाः' ऐसी भी निरुक्ति होती है अर्थात् जो आत्मा में रत्नत्रय का निवास कराते हैं, उनको आवासक/आवश्यक कहते हैं।

अभिप्राय यह है कि चाहे अनगार हो या सागार - आगम में दोनों ही के लिए अपनी-अपनी स्थिति के अनुरूप कुछ ऐसी क्रियाएं निर्दिष्ट की गई हैं जो उन्हें मोक्षमार्ग में सतत गतिमान रखती हैं और जिन्हें नियमतः कर्तव्यरूप में बिना प्रमाद किए सोल्लास प्रतिदिन सम्पन्न करना चाहिए। इन क्रियाओं को 'आवश्यक' संज्ञा से अभिहित किया जाता।

आचार्य पद्मनन्दि ने अपनी पंचविंशतिका में यही छह आवश्यक कर्म बताये हैं -

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः दानं चेति गृहस्थानां षट् र्माणि दिने दिने।। मेधावी पण्डित विरचित धर्म संग्रह श्रावकाचार में गृहस्थ के दह कर्म बताए गये हैं। इसमें गुरुपास्ति के स्थान पर 'वार्ता' को गृहस्थ का आवश्यक कर्म माना है।

महापुराण, चारित्रसार और मेधावी पण्डित रचित श्रावकाचार में वार्ता को गृहस्थ के षट्कर्मों में गिनाया है, परन्तु वार्ता तो कृषि आदि षट्कर्मरूप है जो आजीविका से सम्बद्ध है अतः धर्म कर्म में संभवतः उसे स्वीकृति न देकर गुरुपासना को सम्मिलित किया गया है। इस तरह भिन्न-भिन्न आचार्यों ने षडावश्यक निश्चित किये हैं तथा आवश्यक दैनिक कर्म, धर्म-कर्म, आर्य कर्म, कर्तव्य, मुख्य कर्म आदि विविध संज्ञाओं से अभिहित किया है। इन धार्मिक कर्तव्यों को प्रत्येक गृहस्थ को प्रतिदिन अवश्य करना चाहिए। गृहस्थ दशा में शुभोपयोग रूप धर्म की सिद्धि होती है। उपयुक्त सभी आवश्यक कर्तव्य कर्म पुण्य बंध के हेतु हैं तथा वीतराग भाव की ओर लक्ष्य से जाने में अत्यन्त सहायक हैं।

भगवान महावीर ने अहिंसा के माध्यम से ही इन षट् कर्मों को अपने जीवन में उतारा। भगवान महावीर एक ऐसे युग में पैदा थे जिस युग में मानवता कराह रही थी और राष्ट्र का हर प्राणी संतप्त और दुःखी था। जातिभेद, वर्णभेद और और धर्मभेद के नाम से राष्ट्र का हृदय विदीर्ण हो रहा था। मानव-मानव में भेद की खाइयां पड़ी हुई थीं। अबलायें क्रीतदासी की तरह चौराहों पर खड़ी करके बेची जाती थीं। महावीर के सामने राष्ट्र की यह स्थिति मुंह बाये खड़ी थी जिसको देख कर महावीर जैसा महपुरुष उद्विग्न था। राष्ट्र की इस भयावह स्थिति ने महावीर के हृदय को झकझोर डाला था। भगवान महावीर इन सब पर विचार करने के लिए एकान्त कक्ष में घण्टों तक बैठा करते थे। उनकी अन्तरात्मा एक ही जवाब देती थी कि महावीर इस विशाल वैभव के बीच बैठकर इन समस्याओं का हल नहीं निकाल सकता है। इन समस्याओं के हल के लिए स्वयं को राष्ट्र के लिए एक योगी के रूप में अर्पण करना होगा तब ही राष्ट्र के प्राणियों को शांति की श्वासें मिल सकेंगी। अन्तरात्मा की इस आवाज को भगवान महावीर ने मूर्त रूप दिया और वे योगी जीवन के लिए राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेकर घर से बाहर निकल पड़े। उन्होंने अपने आपको राष्ट्र के लिए अर्पित किया। समस्यायों का हल करने के लिए उन्होंने अहिंसक क्रान्ति, आर्थिक क्रांति, और सामाजिक क्रान्ति आवश्यक समझी और इसके लिए उन्होंने अपने चरण बढ़ा दिये। भगवान् महावीर ने सबसे पहले मंदिरों में धर्म के नाम पर व्याप्त प्राणि हिंसा और मानव हिंसा के खिलाफ अपने कदम बढ़ाये और उन्होंने बताया कि धर्म का सम्बन्ध मानवता से है। नर संहार और पशु संहार से नहीं। इसी के साथ वर्णवाद और जातिवाद पर उन्होंने प्रहार किया। ऊंच और नीच की भावनाएं खत्म कीं। मानवता का साम्राज्य कायम करने के लिए समता के आधार पर समाज की रचना की। योगी जीवन में आने के बाद भगवान महावीर पूर्ण अपरिग्रही रहे। उन्होंने बतलाया कि शोषणहीन जीवन के बिना अहिंसा पनप नहीं सकती और मानव समता आधार पर ही जीवित रह सकता है। इसीलिए महावीर भगवान् ने जबर्दस्त अहिंसक क्रांति की और देश और राष्ट्र को अहिंसा के आधार से ही प्राणवान बनाया। उन्होंने वर्णभेद, जातिभेद को खत्म किया और ऊंच-नीच की भावनाएं खत्म करके एक आदर्श अहिंसक समाज की स्थापना करके राष्ट्र को जीवित किया।

आज भी राष्ट्र के सामने कई ऐसी समस्यायें हैं जो महावीर के पवित्र सिद्धान्तों से ही हल हो सकती हैं। महात्मा गांधी ने राष्ट्र को स्वतंत्र करने के लिए अहिंसा और अपरिग्रह का ही सहारा लिया। अहिंसा के बल पर राष्ट्र को एक सूत्र में गठित किया जिससे परतन्त्र भारत बिना किसी हिंसा के स्वतंत्र हुआ था? लेकिन कुछ वर्षों से राष्ट्र में निःस्वार्थ त्याग की भावना के अभाव में देश की स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि उसका संरक्षण होना बड़ा मुश्किल हो रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में महावीर के षट्कर्मों की एवं अहिंसा की उपादेयता और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गई है। इनमें किसी भी प्रकार का बदलाव अपेक्षित नहीं है बल्कि इनका दृढ़ता पालन जरूरी है।

- कपूरचंद जैन पाटनी
प्रधान सम्पादक

एकजुटता की आवश्यकता

डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, बड़ौत

आज की आवश्यकता समाज को एकसूत्र में बांधने की है। एकसूत्र में बंधे बिना समाज का बिखराव हो रहा है। साधु संस्था अलग-अलग पथ और पक्ष को पुष्ट कर रही हैं। श्रावकों में तो विभिन्न घटक बनते ही जा रहे हैं विद्वान् परस्पर के विरोधभाव से बढ़ते जा रहे हैं। यह अलगाव और स्वार्थ की प्रवृत्ति धर्म और समाज दोनों की बहुत बड़ी क्षति का कारण है। कोई ऐसा संगठन बने जो सभी को जोड़ने का कार्य करे। भगवान् महावीर के अनुयायी यदि एक धारा में नहीं हुए तो भगवान् महावीर का 2600 वां जन्मोत्सव मनाने का क्या परिणाम है? हम सभी को यह प्रयास करना चाहिए कि अन्तर्विरोधों का अन्त हो और छोटे-छोटे स्वार्थों के वशीभूत होकर संस्कृति और समाज का जबरजस्त नुकसान न हो सके। संगठित होकर जो भी कार्य किया जायेगा, उसका विशेष महत्त्व होगा, उसके परिणाम दूरगामी होंगे। समाज और संस्कृति का उत्कर्ष होगा। राजनैतिक क्षेत्र में सफलता तो मिलेगी ही मिलेगी किन्तु धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में विशेष गौरव की वृद्धि होगी। यह वास्तविकता है कि संगठन के बिना सामाजिक शक्तियां विखलित हुई हैं और होंगी। शक्तिहीन भी रहती है और रहेंगी। बिखरी हुई सूर्य की रश्मियां किसी कांच विशेष में केन्द्रित हो जाने से अपने नीचे रखी हुई रुई आदि को अग्नि रूप में प्रज्वलित कराने में सहायक हो जाती है और इसके विपरीत असंगठित छोटे से शक्तिहीन तिनके को पक्षी अपनी कोमल चच्चुपुट से भी तोड डालता है। यदि वही तिनके संगठित रूप हो जाते हैं तो उनसे हाथी को भी बांध लिया जाता है जैसा कि नीतिकार का भी कहना है -

अल्पानामपि वस्तूनां वा संहतिः
कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापत्रैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः।।

अर्थात् छोटी-छोटी वस्तुओं की एकता कार्यसिद्धि में समर्थ होती है, क्योंकि संगठित रस्सी रूपतृणों के द्वारा मदोन्मत्त हाथी बांधे जाते हैं। उक्त कथन से शिक्षा लेना आवश्यक है कि यदि दिगम्बर जैन समाज छोटे-छोटे निजी स्वार्थों को तिलाजंलि देकर एक नहीं होती है, तो वह राष्ट्रीय स्तर के कार्यों को करने/कराने में सक्षम नहीं हो सकती है। वर्तमान में समाज को राष्ट्र स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठित करना है। राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक जगत् में विशिष्टता प्राप्त करने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता परस्पर सहयोग की है। समाज का धनिक वर्ग मध्यवर्गीय लोगों से जुड़कर चले। विद्वानों के साथ विचार-विमर्श करके निर्णय लिए जायें। प्रत्येक व्यक्ति के प्रति समानता और सम्मान की दृष्टि रखी जाय तो समाज का विकास ही नहीं होगा अपितु समाज संस्कार सम्पन्न होगी। सहयोग की भावना से होने वाले कार्य सभी को इष्ट होते हैं और सकलार्थ सिद्धिदायक होते हैं। सहयोग की अपेक्षा तो सभी को होगी क्योंकि भगवान् महावीर का धर्म प्राणीमात्र का धर्म है, वही अहिंसा धर्म है, उसी की छत्र छाया में प्रत्येक प्राणी सुखी हो सकता है। जब जैनधर्म में प्रत्येक प्राणी के कल्याण की भावना की मान्यता है तो क्या दिगम्बर जैन धर्मानुयायी भी परस्पर में एक नहीं हो सकते? यह वर्ष भगवान् महावीर के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार का है। इसमें भगवान् महावीर के द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं को जीवन में उतार कर समस्त विरोध भावों को छोड़कर या गौणकर अनेकान्त, अपरिग्रह और अहिंसा सिद्धान्तों का भरपूर प्रचार करना ही एकमात्र उद्देश्य बनाया जाय। घर-घर में महावीर की वाणी को पहुँचाया जाय और जीव मात्र के उद्धार के कार्यक्रमों को आयोजित कराया जाय। यह सब निर्ग्रन्थ दिगम्बर वीतरागी महावीर के उपासकों की एकजुटता और परस्पर के सहयोग के बिना संभव नहीं है। सहयोग से दुर्लभ और असंभव कार्य सुलभ और संभव बन जाते हैं जैसा कि महाकवि माघ भी कहते हैं -

बृहत्सहायः कार्यान्त क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या इवापगा।।

अर्थात् जिस प्रकार साधारण नदी महानदी के सहयोग-मेल से समुद्र में प्रविष्ट हो जाती है उसी प्रकार साधारण मनुष्य भी महापुरुषों की सहायता को प्राप्त होकर कार्यसिद्धि कर लेता है। सम्पूर्ण सामाजिक संस्थाएं विद्वत् संस्थाएं, शैक्षिक संस्थाए, धार्मिक संस्थाएं, भगवान् महावीर के पंचशील-अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह सिद्धान्तों को घर-घर में पहुँचाने का ही उद्देश्य लेकर कार्य करें तो निश्चित ही सफलता मिलेगी। भगवान् महावीर का 2600वां जन्मोत्सव मनाना पूर्ण सार्थक होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain (Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

श्रुत और आज का युवा, ज्ञान से कटता युवा और परंपरा से टूटता समाज

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

लेखक श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा के कार्याध्यक्ष हैं

(गतांक से आगे)

4. उदाहरण – दो युवाओं की कहानीः समाज में जब किसी विचार की प्रासंगिकता समझानी हो, तो सिद्धांत से अधिक प्रभाव उदाहरण का होता है। श्रुत की उपयोगिता को समझने के लिए दो युवाओं की कहानी पर्याप्त है।

राहुल एक होशियार युवक है। उसने अच्छी शिक्षा प्राप्त की, मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी मिली, आकर्षक पैकेज है और आधुनिक जीवनशैली भी। बाहर से देखने पर लगता है - उसके जीवन में सब कुछ है। पर भीतर की स्थिति बिल्कुल अलग है। छोटी-छोटी बातों पर उसे गुस्सा आ जाता है। माता-पिता से संवाद कम होता जा रहा है। रिश्तों में स्थिरता नहीं है आज कोई है, कल कोई और। रात को अकेलेपन में उसे एक अजीब-सा खालीपन घेर लेता है। वह स्वयं स्वीकार करता है ''सब है, फिर भी कुछ नहीं है।''

राहुल की समस्या संसाधनों की नहीं, बल्कि दृष्टि की है। उसने जीवन जीने के साधन तो सीख लिए, पर जीवन को समझने की कला नहीं सीखी। श्रुत उसके जीवन से अनुपस्थित है।

दूसरी ओर अमित है। वह भी नौकरी करता है, सामान्य आय है, कोई असाधारण वैभव नहीं। पर वह प्रतिदिन 20 मिनट तत्त्वार्थसूत्र का अध्ययन करता है। वह जानता है कि क्रोध उसका शत्रु है, अपेक्षा दुख का कारण है और आत्मा मूलतः स्वतंत्र है। इसलिए जब जीवन में कठिनाई आती है, तो वह टूटता नहीं। जब सफलता मिलती है, तो वह अहंकार में नहीं बहता। अमित के पास भौतिक रूप से कम हो सकता है, पर उसका मन शांत है। वह माता-पिता के साथ बैठकर बात करता है, रिश्तों को संभालना जानता है और स्वयं से भागता नहीं। यही श्रुत का प्रभाव है।

यहाँ अंतर नौकरी, पैसा या योग्यता का नहीं है अंतर है नजरिए का। राहुल जीवन को बाहर से भरना चाहता है, अमित भीतर से। यही कारण है कि कहा गया है - श्रुत केवल जीवन नहीं बदलता, जीवन को देखने का नजरिया बदलता है।

5. ''श्रुत पुराना है'' - यह भ्रम किसने फैलाया?: यह मान लेना कि श्रुत पुराना है, एक मासूम भूल नहीं, बल्कि एक सुनियोजित भ्रम है। प्रश्न उठता है - यह भ्रम फैलाया किसने? उत्तर असहज है, पर स्पष्ट है - आज के उपभोग-प्रधान बाजार ने। आधुनिक बाजार चाहता है कि मनुष्य हमेशा असंतुष्ट रहे क्योंकि संतुष्ट व्यक्ति अच्छा उपभोक्ता नहीं बनता। उसे बार-बार कुछ नया चाहिए, नया फोन, नया स्टेटस, नई पहचान इसीलिए बाजार का संदेश है - ''जो है, वह कम है और चाहिए।'' श्रुत इसके ठीक विपरीत सिखाता है। वह कहता है - ''जो है, उसी में सुख देखने की दृष्टि विकसित करो।'' अब सोचिए, जो विचार मनुष्य को संतोष सिखाएगा, वह बाजार को कैसे स्वीकार्य होगा? इसी कारण धीरे-धीरे श्रुत को ''आउटडेटेड'', ''अप्रैक्टिकल'' और ''पुराना'' कहा जाने लगा। शास्त्रों को पिछड़ेपन से जोड़ा गया और तनाव को आधुनिक जीवन का नॉर्मल साइड-इफेक्ट घोषित कर दिया गया। यह स्थिति इतनी सामान्य बना दी गई कि आज यदि कोई शांत है, तो उसे असामान्य समझा जाता है। सच्चाई यह है कि पुराना श्रुत नहीं है, पुरानी हमारी समझ है। क्रोध आज भी दुख देता है, लोभ आज भी अशांति पैदा करता है और अहंकार आज भी रिश्ते तोड़ता है जैसे हजारों वर्ष पहले करता था। फिर श्रुत कैसे अप्रासंगिक हो सकता है? श्रुत इसलिए खतरनाक लगता है, क्योंकि वह मनुष्य को भीतर से स्वतंत्र बनाता है। और स्वतंत्र मन बाजार के लिए सबसे बड़ा खतरा होता है।

6. युवा और शास्त्र - टकराव नहीं, समाधानः आज का युवा जब शास्त्रों की बात करता है, तो उसके मन में पहला प्रश्न होता है - ''मुझे इससे मिलेगा क्या?'' यह प्रश्न गलत नहीं है। गलत तब होता है, जब उत्तर सुने बिना ही शास्त्रों को खारिज कर दिया जाए। श्रुत युवा को करियर नहीं देता, पर वह करियर को संभालने की बुद्धि देता है। वह नौकरी नहीं दिलाता, पर निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है। वह प्रतिस्पर्धा नहीं सिखाता, पर भावनाओं पर नियंत्रण सिखाता है।

श्रुत से युवा को मिलता है - सही समय पर सही निर्णय लेने का विवेक, क्रोध, ईर्ष्या और भय पर नियंत्रण, रिश्तों में संतुलन और संवाद की समझ, असफलता में टूटने के बजाय स्थिर रहने की शक्ति और सफलता में अहंकार के बजाय विनम्रता। आज का युवा तेज है पर अधीर है। श्रुत उसे धैर्य देता है। आज का युवा महत्वाकांक्षी है, पर अस्थिर है। श्रुत उसे संतुलन देता है। यही कारण है कि कहा गया है - ''श्रुत करियर नहीं रोकता, श्रुत चरित्र बनाता है।'' और चरित्र के बिना करियर अंततः बोझ बन जाता है।

7. जैन श्रुत और आधुनिक जीवनः तत्त्वार्थसूत्र का सूत्र - ''सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः'' केवल मोक्ष का मार्ग नहीं बताता, बल्कि जीवन जीने का पूर्ण विज्ञान प्रस्तुत करता है। सम्यग्दर्शन अर्थात सही दृष्टि - मैं कौन हूँ, जीवन का उद्देश्य क्या है। सम्यग्ज्ञान अर्थात सही समझ - क्या स्थायी है, क्या क्षणिक। सम्यक्चारित्र अर्थात सही आचरण - जो समझा है, उसे जिया जाए।

आज का युवा केवलज्ञान पर अटका है। वह जानकारी इकट्ठा करता है, पर दृष्टि विकसित नहीं करता। आचरण की बात आए तो उसे ''पुराना'' कहकर छोड़ देता है। परिणाम स्वरूप ज्ञान बोझ बन जाता है। श्रुत इन तीनों को जोड़ता है। वह ज्ञान को दृष्टि देता है और दृष्टि को आचरण में उतारता है। यही कारण है कि श्रुत आधुनिक जीवन का विरोधी नहीं, उसका संतुलनकर्ता है। यदि आज का युवा श्रुत को समझ ले तो वह आधुनिक रहेगा, पर अंधा नहीं। सफल रहेगा, पर खोखला नहीं। तेज चलेगा, पर गिरकर नहीं। यही श्रुत की शाश्वत उपयोगिता है - कल भी, आज भी और आने वाले कल में भी।

8. कोट्स जो युवा को झकझोरें: कभी-कभी लंबे प्रवचन से अधिक प्रभाव एक सटीक वाक्य डालता है। श्रुत के संदर्भ में कहे गए कुछ वाक्य केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि भीतर तक झकझोरने के लिए हैं।

''श्रुत के बिना पढ़ाई अंधी है।'' यह वाक्य शिक्षा व्यवस्था पर एक कठोर प्रश्न खड़ा करता है। डिग्रियाँ मिल सकती हैं, कौशल

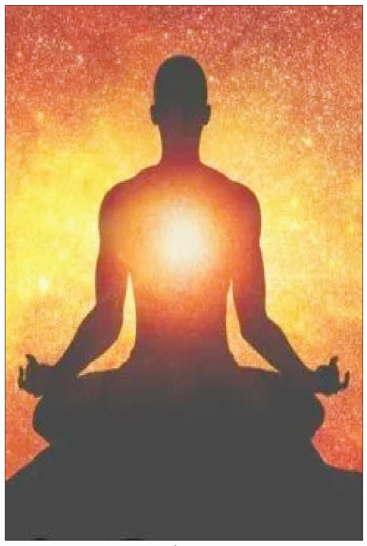

विकसित हो सकता है, पर यदि विवेक नहीं है तो वही शिक्षा व्यक्ति को अहंकारी, स्वार्थी और संवेदनहीन बना देती है। बिना श्रुत की पढ़ाई ऐसी गाड़ी है, जिसमें इंजन तो है, पर हेडलाइट नहीं।

''जो शास्त्र नहीं पढ़ता, वह समाज की भाषा में सोचने लगता है।'' यह सबसे खतरनाक स्थिति है। जब व्यक्ति अपने विचार स्वयं नहीं करता, तब वह भीड़ की सोच उधार ले लेता है। फिर सही-गलत का निर्णय समाज करता है, आत्मा नहीं। शास्त्र व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा से सोचने की शक्ति देते हैं।

''युवा अगर शक्तिशाली है और श्रुतविहीन है, तो वह समाज के लिए खतरा बन सकता है।''

इतिहास गवाह है - बिना विवेक की शक्ति विनाशकारी होती है। आज का युवा तकनीक, संसाधन और ऊर्जा से भरपूर है। यदि उसके पास श्रुत नहीं होगा, तो यही शक्ति अहंकार, हिंसा, शोषण और अराजकता में बदल सकती है।

''श्रुत तुम्हें दुनिया से नहीं काटता, दुनिया के जहर से बचाता है।''

यह भ्रम तोड़ने वाला वाक्य है। श्रुत पलायन नहीं सिखाता, बल्कि सुरक्षा कवच बनता है। ईर्ष्या, तुलना, लालच, वासना-ये सब आधुनिक जीवन के जहर हैं। श्रुत इनके प्रभाव से बचने की प्रतिरोधक क्षमता देता है। ये कोट्स सजावट नहीं हैं। ये चेतावनी हैं। ये दर्पण हैं, जिनमें युवा यदि स्वयं को देख ले, तो दिशा बदल सकती है।

9. श्रुत से दूर युवा - समाज का भविष्य?: कल्पना कीजिए एक ऐसे समाज की - जहाँ युवा सफल है, पर संवेदनहीन है। शिक्षित है, पर संस्कारहीन है। स्वतंत्र है, पर संयमहीन है। ऐसा समाज तकनीकी रूप से आगे होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। ऊँची इमारतें होंगी, तेज इंटरनेट होगा, आधुनिक सुविधाएँ होंगी। पर नैतिक रूप से वह समाज भीतर से खोखला होगा। वहाँ रिश्ते उपयोग पर आधारित होंगे, मूल्य सुविधा के अनुसार बदलेंगे और मनुष्य मनुष्य नहीं, साधन बन जाएगा।

श्रुत से कटे हुए युवा की सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि वह परंपरा और प्रगति के बीच संतुलन नहीं बना पाता। वह या तो अंधी आधुनिकता में बह जाता है, या फिर भीतर से असुरक्षित होकर विद्रोही बन जाता है। ऐसे समाज में पीढ़ियाँ तो होंगी, पर परंपरा नहीं होगी। माता-पिता और संतान के बीच संवाद नहीं रहेगा, केवल अपेक्षाएँ रहेंगी। विवाह समझौता बन जाएगा, त्याग कमजोरी कहलाएगा और संयम पिछड़ापन। जब श्रुत नहीं होता, तब समाज कानून से चलता है, विवेक से नहीं। और जिस समाज को हर बात के लिए कानून चाहिए, वहाँ मनुष्यता पहले ही हार चुकी होती है। यह कोई भविष्य की कल्पना नहीं है - यह स्थिति धीरे-धीरे हमारे सामने आकार ले रही है। बढ़ते अपराध, टूटते रिश्ते, अकेलापन और मानसिक बीमारियाँ इसी दिशा का संकेत हैं। यदि युवा श्रुत से दूर रहा, तो समाज की गति बढ़ेगी, पर स्थिरता समाप्त हो जाएगी। यही सबसे बड़ा खतरा है।

समाधान - श्रुत और युवा को कैसे जोड़ा जाए?: समस्या गहरी है, पर समाधान असंभव नहीं। आवश्यकता है दृष्टिकोण बदलने की।

1. भाषा सरल हो - श्रुत को डरावना बना दिया गया है। भारी शब्द, कठिन व्याख्याएँ - युवा दूर भागता है। यदि शास्त्र मित्रवत भाषा में प्रस्तुत हों, तो जुड़ाव स्वाभाविक होगा।

2. संवाद हो, उपदेश नहीं - युवा आज प्रश्न करता है। यदि उसे डाँटा जाएगा, तो वह दूर जाएगा। यदि सुना जाएगा, तो जुड़ेगा। श्रुत का प्रसार संवाद से हो, आदेश से नहीं।

3. छोटा लेकिन नियमित - घंटों का पाठ नहीं, रोज के 15 मिनट पर्याप्त हैं। निरंतरता चमत्कार करती है। थोड़ी-सी श्रुत साधना पूरे दिन के विचार और व्यवहार को संतुलित कर देती है।

4. रोल मॉडल - सबसे प्रभावी उपदेश जीवन से आता है। ऐसे युवा सामने आएँ जो श्रुत के साथ आधुनिक, सफल और संतुलित हों। तभी यह भ्रम टूटेगा कि श्रुत सफलता का विरोधी है।

समाधान बाहर नहीं, समाज के भीतर ही है - बशर्ते इच्छा हो।

निष्कर्ष - श्रुत या शून्यताः आज स्थिति इतनी स्पष्ट है कि अब किसी भ्रम या मध्य मार्ग की गुंजाइश शेष नहीं रही। हमारे सामने केवल दो ही विकल्प खड़े हैं - या तो ऐसा जीवन चुना जाए जो बाहर से तेज, चमकदार और सकता है। वह शिक्षा, तकनीक और प्रतिस्पर्धा के बल पर बहुत आगे तक पहुँच सकता है। परंतु जब दिशा का बोध नहीं होता, तब गति स्वयं एक बोझ बन जाती है। बिना श्रुत के युवा उपलब्धियाँ तो इकट्ठा करता है पर जीवन का अर्थ खो देता है। वह सब कुछ पाकर भी खाली रह जाता है, क्योंकि उसे यह समझ ही नहीं होती कि किसके लिए दौड़ रहा है और कहाँ रुकना है।

इसके विपरीत, श्रुत के साथ चलने वाला युवा भले ही दिखावे की दौड़ में पीछे दिखाई दे पर उसका हर कदम सही दिशा में पड़ता है। वह जानता है कि सफलता का अर्थ केवल आगे निकल जाना नहीं, बल्कि भीतर स्थिर रह पाना भी है। श्रुत उसे यह दृष्टि देता है कि जीवन केवल पाने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि समझने, स्वीकारने और संयमित ढंग से जीने की कला है।

आज दिगंबर जैन समाज के सामने सबसे बड़ी और सबसे गंभीर जिम्मेदारी यही है कि वह युवा को केवल भव्य आयोजनों, बड़े मंचों और क्षणिक उत्साह तक सीमित न रखे, बल्कि उसे श्रुत से जोड़ें। आयोजन उत्साह पैदा करते हैं पर वह उत्साह थोड़े समय में समाप्त हो जाता है। श्रुत वह शक्ति है जो व्यक्ति को भीतर से स्थिर बनाती है, और स्थिरता ही किसी भी समाज की वास्तविक नींव होती है।

हम यह न भूलें कि मंदिर पत्थरों से बनते हैं, उनकी भव्यता आँखों को आकर्षित कर सकती है, पर समाज पत्थरों से नहीं बनता। समाज का निर्माण श्रुत से होता है - विवेक से, संयम से और आत्मबोध से। यदि आज श्रुत को बचाया नहीं गया, यदि उसे युवाओं के जीवन से जोड़ने का ईमानदार प्रयास नहीं किया गया, तो कल हमारे पास इमारतें तो होंगी, पर उन्हें संभालने वाला संवेदनशील और संस्कारवान समाज नहीं होगा।

यही अंतिम सत्य है, और यही अंतिम चेतावनी भी।

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है।
संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA
ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow Pin Code - 226004 (U.P.)

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

शेष पृष्ठ 1 का....

का भव्य शुभारम्भ दिनांक 01 फरवरी 2026 को नई दिल्ली स्थित एन. डी. एम. सी. सभागार में हुआ।

समारोह का शुभारम्भ शास्त्री जी के सारगर्भित एवं प्रेरणादायी कविता-पाठ से हुआ, जिसने सम्पूर्ण वातावरण को वैचारिक ऊर्जा से भर दिया।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्री ललित सरावगी (वाह जिंदगी) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''हम सब पहले जैन हैं न दिगम्बर, न श्वेताम्बर। हमें सराक एवं रंग्या जैसी जातियाँ जो जैन तीर्थकरों की आराधना करती हैं, उन्हें जैन समाज की मुख्य धारा से जोड़ना आज की महती आवश्यकता है।''

युवा महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री विकेश मेहता जैन ने अपने ओजस्वी संबोधन में समाजजनों से आग्रह किया कि वे व्यापार एवं नौकरी के साथ-साथ समाजसेवा के लिए भी समय निकालें। उन्होंने कहा कि जैन जनगणना जागृति अभियान को एक राष्ट्रीय मिशन के रूप में आगे बढ़ाया जाना चाहिए तथा महासभा को समाज के प्रतिष्ठित अधिवक्ताओं एवं प्रबुद्धजनों की प्रतिभा का समुचित उपयोग करना चाहिए।

ऑल इंडिया स्थानकवासी समाज के प्रणेता श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन ने जनगणना अभियान में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर विशेष बल देते हुए कहा कि हमें अपने नाम के साथ ''जैन'' अवश्य लिखना चाहिए तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जनगणना प्रपत्र भरने की विधि समझानी चाहिए।

वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सत्येन्द्र जैन ने दक्षिण भारत में नाम के साथ ''जैन'' न लिखे जाने की प्रवृत्ति पर ध्यान आकृष्ट किया। श्री सुभाष जैन ने जनगणना कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार को महावीर जयंती, साधु-संतों के प्रवचनों एवं जैन विद्यालयों तक पहुँचाने का आग्रह किया।

श्री हंसमुख जैन गांधी ने मंदिरों, स्थानकों, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक जनजागृति की आवश्यकता बताई।

तेरापंथ समाज के श्री के. सी. जैन ने तेरापंथ समाज की ओर से जैन जनगणना जागृति अभियान को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

पश्चिम बंगाल के सराक सम्प्रदाय से डा. त्रिदिब कुमार हलदर एवं डा. अरुण हलदर ने समारोह में सहभागिता की। डा. अरुण हेल्दर ने बताया कि सराक समाज के लोग तीर्थकर आदि नाथ एवं तीर्थंकर पार्श्व नाथ की पूजा-आराधना करते हैं तथा णमोकार मंत्र का नियमित जाप करते हैं। उन्होंने सराक समाज को जैन समाज में समाहित करने का आग्रह किया।

श्री मंडार जैन संघ के अध्यक्ष श्री दिनेश कुमार जैन दोशी ने प्रस्तावित किया कि जैन जनगणना अभियान को साधु-सन्तों के प्रवचन द्वारा दूरदराज के गांवों तक पहुँचाया जा सकता है। हमारे समाज की संस्थायें सम्पूर्ण देश में हैं। हमें उन्हें इस अभियान में भागीदार बनाना है।

दक्षिण भारत जैन सभा के श्री विनोद डुण्डावर ने सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण पर बल देते हुए जाति-उपजाति के भेदभाव को समाप्त करने का आह्वान किया। उन्होंने तमिलनाडु में ब्राह्मी लिपि के अवशेषों का उल्लेख करते हुए सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य एवं आचार्य भद्रबाहु के दक्षिण भारत प्रवास की ऐतिहासिक पुष्टि की।

झारखंड से पधारे प्रतिनिधि श्री अजीत जैन ने बताया कि भगवान महावीर का विहार झारखंड के सरायकेला क्षेत्र में हुआ था। ऐसा वर्णित है।

डॉ. वीरसागर जैन ने जैन जनगणना हेतु Ai आधारित जैन जनगणना ऐप विकसित करने का सुझाव दिया तथा युवाओं की सक्रिय सहभागिता पर बल दिया। उन्होंने जनगणना प्रपत्र में धर्म कॉलम में ''जैन'' तथा भाषा कॉलम में ''प्राकृत'' लिखने का आग्रह किया।

भारतीय जैन संगठन के श्री नयन जैन ने कहा कि संत, संस्था और समाज तीनों के सामूहिक प्रयास से ही यह अभियान राष्ट्रव्यापी सफलता प्राप्त कर सकता है।

सी. ए. राजीव जैन ने बच्चों को धर्म से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सुखराज सेठिया ने क्षेत्रीय सम्मेलनों, सोशल मीडिया एवं प्रिंट मीडिया के माध्यम से जनगणना अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार का सुझाव दिया।

महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा ने युवाशक्ति की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन जनगणना जागृति अभियान की सफलता में युवाओं की सहभागिता निर्णायक सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि जिन समाजजनों के पास संचार के आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ युवाओं का प्रत्यक्ष सहयोग अत्यंत उपयोगी होगा। युवाशक्ति न केवल जनगणना प्रक्रिया को समझाने में सहायक बनेगी, बल्कि घर-घर पहुँचकर समाजजनों को जागरूक करने एवं उन्हें अभियान से जोड़ने का महत्वपूर्ण दायित्व भी निभाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि युवा वर्ग की ऊर्जा, तकनीकी समझ और सेवा-भाव इस अभियान को गति प्रदान करेगी और जैन समाज को संगठित एवं सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाएगी।

प्रसिद्ध अधिवक्ता एवं विधिवेत्ता श्री विष्णु शंकर जैन ने जैन समाज के हितार्थ न्यायालय में चल रहे विभिन्न मामलों में अपने योगदान की चर्चा की। उन्होंने कुतुबमीनार से संबधित प्रकरण का उल्लेख करते हुए बताया कि इसका निर्माण 27 जैन एवं हिन्दु मंदिरों के विध्वंस के उपरान्त किया गया था तथा इस ऐतिहासिक तथ्य से जुड़े मामले में वे वर्तमान में न्यायालय में विधिक पक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। अपने वक्तव्य में उन्होंने जैन समाज की निरंतर घटती जनसंख्या पर गहरी चिंता व्यक्त की और कहा कि समाज के अस्तित्व एवं भविष्य की सुरक्षा के लिए जनसंख्या वृद्धि और सामाजिक जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने समाजजनों से आहवान किया कि वे इस विषय पर गंभीरता से विचार करें तथा भावी पीढ़ी के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सकारात्मक प्रयास करें।

संबंधित विभिन्न न्यायिक मामलों में अपने योगदान का उल्लेख किया तथा जैन समाज की घटती जनसंख्या पर चिंता व्यक्त करते हुए जनसंख्या वृद्धि एवं जागृति की आवश्यकता पर बल दिया।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जैन जनगणना जागृति अभियान की ऐतिहासिक महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि यह अभियान जैन समाज की वास्तविक स्थिति, संख्या एवं आवश्यकताओं को उजागर करने का सशक्त माध्यम बनेगा। उन्होंने महासभा के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं समाजजनों से आह्वान किया कि वे इस अभियान के दोनों चरणों में पूर्ण समर्पण, सक्रियता एवं जिम्मेदारी के साथ सहभागी बनें ताकि यह महा अभियान अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल हो सके।

उन्होंने विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि जैन जनगणना अभियान को दो चरणों में सम्पन्न किया जाएगा।

प्रथम चरण (अप्रैल 2026 से सितम्बर 2026) के अंतर्गत जैन परिवारों के मकानों की गणना की जाएगी, जिसमें मकानों की स्थिति, निर्माण प्रकार तथा उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं से संबंधित विवरण एकत्रित किया जाएगा। द्वितीय चरण (फरवरी 2027) में जनगणना के माध्यम से शिक्षा स्तर, प्रजनन दर, धर्म एवं भाषा से संबंधित महत्वपूर्ण आँकड़े संकलित किए जाएंगे, जो भविष्य की सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक योजनाओं की आधारशिला बनेंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इन दोनों चरणों से प्राप्त आँकड़े न केवल समाज की योजनाबद्ध प्रगति में सहायक होंगे बल्कि जैन समाज की पहचान, अधिकारों एवं सांस्कृतिक संरक्षण के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे। उन्होंने सभी से जनगणना प्रपत्र के धर्म कॉलम में ''JAIN तथा मातृभाषा कॉलम में ''प्राकृत'' लिखने का विशेष अनुरोध किया।

पूज्य श्री अमित मुनि जी महाराज ने कहा कि ''जैनत्व हमारी संस्कृति और हमारा गौरव है।'' पूज्य श्री अजित मुनि जी महाराज ने जैन धर्म को जीवन-कला बताते हुए संतों एवं संस्थाओं के संयुक्त प्रयास पर बल दिया।

राष्ट्रसंत परम्पराचार्य 108 श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि ''जनगणना के माध्यम से ही हम अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकते हैं। जो जातियाँ हमसे दूर हो गई हैं, उन्हें पुनः जैन समाज की मुख्यधारा में लाना होगा।'' उन्होंने विभिन्न प्रांतों में जैन परम्पराओं का पालन करने वाली जातियों को अपनाने का आह्वान किया।

श्रुत संवर्धिनी महासभा के महामंत्री श्री शरदराज जैन कासलीवाल ने सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से तन-मन-धन से इस अभियान में जुड़ने का अनुरोध किया।

समारोह के अंत में महासभा के महामंत्री श्री पवन जैन गोधा ने देशभर से पधारे सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का अत्यंत कुशल, सुव्यवस्थित, विद्वतापूर्ण एवं प्रभावशाली संचालन श्री गजेन्द्र जैन (सी.ए.), ट्रस्टी महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किया गया। उनकी सुमधुर एवं ओजस्वी वाणी, विषय की गहरी समझ तथा समय- प्रबंधन की उत्कृष्ट क्षमता के कारण संपूर्ण समारोह अनुशासित, गरिमामय एवं रोचक बना रहा। उन्होंने प्रत्येक वक्ता को उचित समय और सम्मान प्रदान करते हुए कार्यक्रम को सुचारु रूप से आगे बढ़ाया, जिससे श्रोतागण अंत तक भावनात्मक रूप से जुड़े रहे। उनके कुशल संचालन से समारोह की भव्यता, गरिमा और प्रभावशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई तथा कार्यक्रम एक आदर्श आयोजन के रूप में स्मरणीय बन गया।

शेष पेज 03 का...

प्रतिनिधिमंडल, मेरे तथा श्री नरेंद्र जैन गोधा, ट्रस्टी सहित अन्य पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रतिनिधिमंडल द्वारा नागौर जैन समाज एवं गांधीधाम (गुजरात) में महासभा का ध्वज फहराया गया, जिससे समाज में संगठनात्मक एकता एवं उत्साह का संचार हुआ। श्रुत संवर्धिनी महासभा के महामंत्री श्री शरदराज जैन कासलीवाल ने सभी पदाधिकारियों व सदस्यों का आभार व कृतज्ञता ज्ञापित किया जो देश के विभिन्न प्रदेशों से आकर प्रबंधकारिणी की बैठक को अपने विचारों से लाभान्वित किया। इन्होंने महासभा को नई प्रेरणा व ओज प्रदान किया। हमें पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी इनका सहयोग व मार्गदर्शन महासभा को प्राप्त होता रहेगा तथा अपने-अपने क्षेत्र में आगामी जनगणना कार्यक्रम में जैन समाज के लोगों को जागरूक करने में सक्रिय रहेंगे। महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा ने प्रबंधकारिणी की बैठक में उपस्थित सभी महानुभावों को बताया कि महासभा का उद्देश्य है कि प्रत्येक जैन साधर्मी महासभा का सदस्य बने और संगठन को सशक्त बनाए। इसी क्रम में महासभा सदस्यता संबंधी निम्न विकल्प निर्धारित किए गए हैं। यह महत्वपूर्ण सूचना शीघ्र ही जैन गजट में प्रकाशित की जाएगी। इस अवसर पर असम से पधारे श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट के श्री अशोक चूड़ीवाल जी, अजीत जैन चंदूवाड़ जी, कमल जैन कासलीवाल नरेंद्र गोधा जी, मुकेश जैन एडवोकेट, किशोर जी, अजीत झांझरी जी आदि सम्मानित ट्रस्टियों द्वारा अतिथियों का पारंपरिक एवं भव्य स्वागत किया गया। असम की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के अनुरूप अतिथियों को 'जापी' एवं 'गमछा' (सफेद वस्त्र जिस पर लाल कढ़ाई होती है) पहनाकर तथा 'जोराई' (असम की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक) भेंट कर सम्मानित किया गया। यह परंपरा असम में आतिथ्य, सम्मान एवं स्नेह का प्रतीक मानी जाती है जिसे प्रायः बिहू पर्व एवं विशिष्ट अतिथियों के स्वागत अवसर पर अपनाया जाता है। इस आत्मीय स्वागत ने समारोह को विशेष गरिमा और सांस्कृतिक रंग प्रदान किया।

अंत में महामंत्री श्री पवन जैन गोधा जी के सभी पदाधिकारियों एवं महासभा स्टाफ को धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक की कार्यवाही सम्पन्न हुई।

धर्म ध्वजा फहराना अपने जीवन, परिवार और समाज को धर्म की ऊँचाइयों तक ले जाने का संकल्प है

शेखरचंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता - जैन गजट

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में धर्म ध्वजा (झंडारोहण) सबसे पहला और अत्यंत महत्वपूर्ण कर्म होता है, यह केवल किसी आयोजन का शुभारम्भ नहीं बल्कि धर्म के सार्वजनिक उद्घोष और पंचकल्याणक के

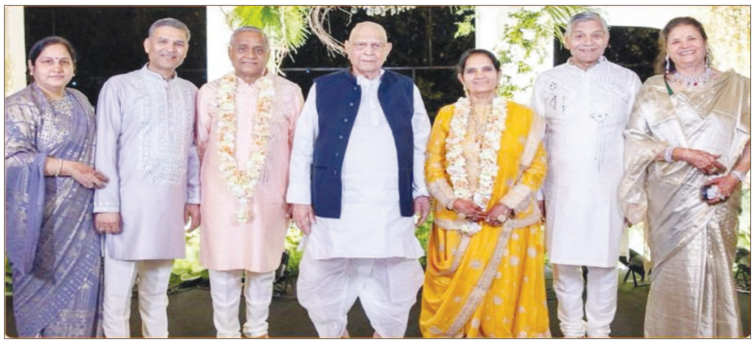

पवित्र संकल्प की घोषणा है।

धर्म ध्वजा फहराने का अर्थ है - आकाश को साक्षी मानकर यह घोषणा करना कि यह महोत्सव केवल विधियों और अनुष्ठानों का नहीं, आत्मा के जागरण और जीवन-परिवर्तन का दिव्य पर्व है। जब तक यह धर्म ध्वजा लहराती रहती है, तब तक धर्म की चेतना, संघ की शक्ति और साधना का आलोक निरंतर इस क्षेत्र और सम्पूर्ण समाज पर अखंड रूप से प्रवाहित होता रहता है। धर्म ध्वजा फहराने वाले परिवार को सौभाग्य प्राप्त होता है, उसके जीवन पर इस पुण्य कर्म का प्रभाव स्पष्ट और स्थायी रूप से दिखाई देता है - 1. जीवन में आंतरिक शांति और स्थिरता का वास 2. निर्णयों में धर्मबोध, विवेक और स्पष्टता 3. परिवार में संस्कार, एकता और मर्यादा की दृढ़ता 4. कठिन समय में धैर्य, आत्मबल और साहस 5. यश, कीर्ति और सामाजिक सम्मान।

धर्म ध्वजा फहराने वाला परिवार समाज में धर्मनिष्ठा और आदर्श जीवन के लिए जाना जाता है। यह यश केवल वर्तमान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी पुण्य-स्मृति और प्रेरणा बनकर आगे बढ़ता है। धर्म ध्वजा फहराना केवल शिखर पर ध्वज उठाना नहीं, यह अपने जीवन, परिवार और समाज को धर्म की ऊँचाइयों तक ले जाने का संकल्प है।

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

श्री मुंबई दिगम्बर जैन सेवा संघ

रजि.नं.E-35247 (M)

श्री मुंबई दिगम्बर जैन सेवा संघ आयोजित

ऑनलाईन/ऑफलाईन

22 वाँ विशाल विवाह योग्य युवक-युवती

परिचय सम्मेलन

रविवार, ५ अप्रैल २०२६ सुबह १० बजे

सम्मेलन स्थल: श्री हलारी वीसा ओसवाल समाज वाडी, दादा साहेब फालके रोड, दादर ईस्ट, मुम्बई

साधर्मी बन्धुओं, जय जिनेन्द्र!

दिगम्बर जैन समाज के विवाह योग्य युवक/युवतियों का २२ वाँ विशाल परिचय सम्मेलन ऑनलाईन/ऑफलाईन दि. ०५ अप्रैल २०२६ रविवार को सुबह १०.०० बजे रखा जा रहा है। दिगम्बर जैन समाज में विवाह योग्य युवक युवतियों के लिए योग्य जीवन-साथी का चयन करना एक दुर्लभ सा काम है। समस्त दिगम्बर जैन समाज का जातिवाद के तौर पर छोट-छोटे संगठन होने से तथा सामाजिक दायरा कम होने की वजह से योग्य जीवन साथी खोजने में काफी दिक्कत रहती है।

श्री मुम्बई दिगम्बर जैन सेवा संघ चाहता है कि दिगम्बर जैन समाज का एक विस्तृत दायरा बने ताकि सुगमता से जीवन-साथी का चयन किया जा सके, इसी बात को ध्यान में रखते हुये संघ विवाह योग्य युवक युवतियों का २२ वाँ विशाल परिचय सम्मेलन का आयोजन करने जा रहा है। इस सम्मेलन का प्रवेश शुल्क रू. १२००/- प्रति सदस्य रखा गया है। (६ मार्च से रजिस्ट्रेशन शुल्क बढकर १५००/- प्रति सदस्य हो जाएगा।) फॉर्म दि.१६ मार्च २०२६ तक www.sevasamiti.com पर भर कर भेजे ताकि उनके नाम परिचय पुस्तिका में प्रकाशित किये जा सके, समाज के सभी लोगो को चाहिए कि इस परिचय सम्मेलन में ज्यादा से ज्यादा संख्या में भाग लेकर वर्तमान समय की जरूरत को देखते हुए इस प्रकार के सम्मेलन को सफल बनावें। आनेवाले सभी महानुभावों के लिए अल्पाहार एवं भोजन की व्यवस्था है।

संघ के इस अभूतपूर्व अनुकरणीय परिचय सम्मेलन में सभी जरूरतमंद अपनी उपस्थिती दर्ज करायें। आपे तथा आपके निकटतक किसी संबंधी के यहाँ कोई विवाह योग्य युवक-युवति हो तो उनका भी फार्म भर देवे।

अध्यक्ष कैलाशचंद छाबडा | महामंत्री कमल गंगवाल | कोषाध्यक्ष सीए वर्धमानकुमार कासलीवाल

संयोजक

निर्मल जैन (टीकमगढ़) 98690 02543 | मनीष जैन 98218 84044 | डॉ.मनोज जैन 93210 29234 | सीए संजय राजा जैन 93200 62643

For Online Registration- www. sevasamiti.com रजिस्ट्रेशन के लिए QR

नमनकर्ता : सीए वर्धमानकुमार कासलीवाल, डोंबिवली

मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्ति धाम जहाजपुर के दर्शनार्थ तीन सौ एक यात्रियों का दल बसों द्वारा हुआ रवाना

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

1 फरवरी। फागी कस्बे से आज मुनि सुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम जहाजपुर के दर्शनार्थ हेतु पांच बसों एवं सात-आठ कारों के द्वारा तीन सौ एक यात्रियों का दल रवाना हुआ। उक्त दल ने स्वस्तिधाम जहाजपुर पहुंचकर मूलनायक भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के दर्शन कर धर्म लाभ प्राप्त किया। अग्रवाल मंदिर समिति अध्यक्ष महावीर झंडा एवं मंत्री कमलेश चौधरी ने बताया कि प्रसिद्ध समाजसेवी अनिल कुमार-श्रीमति सुनिता कठमाना की 25 वीं वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में क्षेत्र पर मुनिसुव्रतनाथ महामंडल विधान का भव्य आयोजन किया गया जिसमें पंडित विष्णु कुमार जैन के दिशा निर्देश में विभिन्न मंत्रोच्चारणों के द्वारा 101 पूज्यार्थियों ने 130 श्रीफलों द्वारा अर्घ्य चढ़ाकर सुख समृद्धि और खुशहाली की कामना की, गोधा ने बताया कि इससे पूर्व कठमाना परिवार की तरफसे बोली के माध्यम से प्रथम अभिषेक, एवं शांति धारा की गई। कार्यक्रम में उक्त एनवसिरी पर दोपहर को हल्दी, मेंहदी का कार्यक्रम, सायंकाल रिंग सेरेमनी कार्यक्रम में आयोजित किया गया, जिसमें सारे समाज एवं सभी रिश्तेदारों ने कार्यक्रम में शामिल कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उक्त कार्यक्रम में अग्रवाल समाज फागी के अध्यक्ष महावीर झंडा,

मंदिर समिति के मंत्री कमलेश चौधरी, महावीर प्रसाद, रामवतार, नवरत्न प्रेमचंद, कमलेश कुमार, शिखर चंद, गणेश कुमार, बबलू, मुकेश, विनोद, विशाल, एवं पंकज कठमाना सहित सारा परिवार उपस्थित था तथा सकल दिगम्बर जैन समाज के विनोद कलवाडा, महावीर मोदी, गिरीराज झराना, संजय लदाना, त्रिलोक पीपलू, मितेश लदाना, पारस मोदी, महेश बावड़ी, मुकेश गिंदोंडी, विनोद मोदी, राजकुमार मांदी, जीतू कासलीवाल, विमल कलवाड़ा, मुकेश नला, मनीष गोधा, सुनील बजाज, पंकज कलवाड़ा, जम्बू बजाज, विनोद नला, राहुल पंसारी, व्यापार मंडल महासंघ फागी के अध्यक्ष कुलदीप श्रीमाल सहित सारा समाज मौजूद था।

पद्मप्रभु भगवान का मनाया मोक्ष कल्याणक

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

5 फरवरी, 2026। फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेडा, लसाडिया तथा लदाना सहित कस्बे के जिनालयों में जैन धर्म के छठे तीर्थंकर पदमप्रभु भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लापूर्वक मनाया गया। मुनिसुव्रतनाथ जिनालय में प्रातः श्री जी का अभिषेक करने के बाद समाज की ओर से सामूहिक रूप से शांतिधारा कर अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना कर विभिन्न तीर्थंकरों के अर्घ्य अर्पित किए। कार्यक्रम में आचार्य वर्धमान सागर महाराज, आचार्य इन्द्रनंदी जी महाराज, आचार्य विशुद्ध सागर महाराज, आचार्य सुन्दर सागर जी महाराज, गणिनी आर्यिका विशुद्ध मति माताजी, श्रुतमति माताजी, सुबोध मति माताजी, आर्यिका सुरम्यमति माताजी तथा जिनवाणी मां के अर्घ्य अर्पित कर जैन धर्म के छठे तीर्थंकर पदमप्रभु भगवान के मोक्ष कल्याणक महोत्सव का जयकारों के सामूहिक रूप से लाडू चढ़ाकर सुख समृद्धि और शांति की कामना की गई। कार्यक्रम में वयोवृद्ध कपूरचंद नला, मोहनलाल झंडा, भागचंद जैन टीबा, कैलाश कासलीवाल, सौभागमल सिंघल, प्रेमचंद कठमाना, महेंद्र गोधा, महावीर बजाज, हनुमान कलवाड़ा, महावीर मोदी, पदम टीबा, कमलेश चोधरी, राजाबाबू गोधा तथा प्रेम देवी पंसारी, कमला कासलीवाल, शोभा झंडा, रेखा झंडा, संगीता डेठानी, मंजू झंडा, पर्युषणा झंडा, मीनाक्षी मोदी, गुणमाला झंडा, आशा मोदी, रेखा हांडी गांव, ललिता सिंघल, संतोष मांदी, आभा मोदी, आशा बजाज, पिंकी मोदी, सुशीला झंडा एवं रिया जैन सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मौजूद थे।

विमल कुमार-प्रेमचंद बड़जात्या के सुपुत्र अक्षत जैन की शादी में विभिन्न प्रबुद्ध जनों ने शिरकत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

25 जनवरी। प्रसिद्ध समाजसेवी विमल कुमार-प्रेमचंद बड़जात्या मरवा वाले मदनगंज किशनगढ़ के सुपुत्र अक्षत जैन की शादी में अनेक गणमान्य, राजनैतिक हस्तियों ने शिरकत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में इनके सुपुत्र अक्षत जैन की शादी साक्षी जैन सुपुत्री श्री सुनीलकुमार जी गंगवाल इचलकरंजी निवासी के साथ हर्षोल्लास पूर्वक राजस्थली रिसॉर्ट आमेर रोड जयपुर में सम्पन्न हुई, जिसमें प्रदेश की अनेक राजनीतिक सामाजिक हस्तियों ने शिरकत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई, कार्यक्रम में भारत सरकार के कृषि मंत्री भागीरथ चौधरी, मदनगंज किशनगढ़ के विधायक विकास चौधरी, बीजेपी राजस्थान के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया, उप महापौर जयपुर शहर पुनित कर्णावट, प्रसिद्ध समाज निर्मल-पुष्पा बिन्दायका बगरू निवासी कोलकाता प्रवासी, चकवाडा गुणस्थली के संरक्षक डॉक्टर अशोक अनोपडा, आर. ए. एस अधिकारी डॉक्टर आभा जैन, जय कुमार गंगवाल, कमल सोगानी दूदू, सुरेंद्र बोहरा मोजमाबाद, राजकुमार दोषी, सुरेंद्र दगड़ा, प्रदीप पापड़ीवाल, निर्मल पांड्या, मदनगंज किशनगढ़, महावीर प्रसाद पाटनी, कैलाश पाटनी उरसेवा वाले मदनगंज किशनगढ़, सरावगी समाज फागी के अध्यक्ष महावीर अजमेरा तथा राजाबाबू सहित कई गणमान्य नागरिकों ने शिरकत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम में विमल कुमार, प्रेमचंद बड़जात्या, सुरेंद्र दगड़ा, सरावगी समाज फागी के अध्यक्ष महावीर अजमेरा, राजाबाबू गोधा, भारत सरकार के कृषि मंत्री श्री भागीरथ चौधरी

पुण्य के उदय से वैभव मिलता - मुनि विनम्र सागर

मदनगंज किशनगढ़ (संजय जैन)। मुनि विनम्र सागर महाराज ने जैन भवन में आयोजित धर्मसभा में कहा कि दुनिया में अभी व्यक्ति बहुत कुछ चाहता है लेकिन जिसकी जितनी हैसियत होती है उसको उतना मिलता है। बड़ी मुश्किल से जिंदगी ऊपर उठती है। पुण्य के उदय से वैभव मिलता है। पुरुषार्थ, पुण्य एवं पाप तीन प्रकार का धन होता है। उन्होंने कहा कि पुण्य एवं पाप के धन का असर जीवन पर पड़ता है। माता पिता को बच्चों के मन की बातों को जानकारी रखनी चाहिए। बच्चों को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना जरूरी है। बच्चों को दबाव में नहीं प्रभाव में जीना होगा। बच्चों को धार्मिक संस्कार देना बहुत जरूरी है। टैलेंट खराब से खराब वस्तु को सुधार सकता है तो वर्तमान परिवेश में भटक रहे अपने बच्चों को क्यों नहीं सुधार सकते।

भाग्य बारिश का पानी है और परिश्रम कुंए का जल बारिश में नहाना आसान तो है, लेकिन रोज नहाने के लिए हम बारिश के सहारे नहीं रह सकते- आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी

आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज
ससंघ जयपुर में विराजमान हैं

भारत गौरव, साधना महोदधि, तपाचर्य, तप शिरोमणी, युवा तपस्वी भगवान महावीर के पश्चात मौन पूर्वक सिंह निष्क्रीड़ित व्रत की अद्भुत साधना करने वाले दिगम्बरत्व संत समाज के एक मात्र संत अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी गुरूदेव के चरणों में शत् शत् नमन् वंदन अर्चन

-: नमनकर्ता :-

राजेन्द्र कटारिया
अहमदाबाद

चन्दू काला
जे. के. मसाला

मुकेश जैन
संघपति, चेन्नई

संघपति दिलीप हुमड
बड़ौदा गुजरात

श्रीमती सुरभि मोहित बाकलीवाल
फरीदाबाद-हरियाणा

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय प्राकृत भाषा विद्वत्संवाद गिरनारजी में ऐतिहासिक रूप से सानंद सम्पन्न

डा. सुनील जैन 'संचय'

जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर भगवान श्री नेमिनाथ स्वामी की निर्वाण स्थली गिरनारजी में प्राकृत भाषा के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार के उद्देश्य से आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय प्राकृत भाषा विद्वत्संवाद अत्यंत भव्यता, गरिमा एवं विद्वत् वातावरण के साथ सानंद सम्पन्न हुआ। यह आयोजन श्री समवसरण, निर्मल ध्यान केन्द्र, गिरनारजी (जूनागढ़, गुजरात) में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं प्राकृत भाषा विकास फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम को प्राकृताचार्य सुनीलसागर जी महाराज ससंघ का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सम्पूर्ण वातावरण प्राकृत भाषा-साधना और आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत रहा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. लोकमान्य मिश्र, निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर रहे। विशिष्ट अतिथियों में डॉ. ऋषभचन्द जैन फौजदार (एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह), डॉ. जिनेंद्र जैन (जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं), डॉ. जय कुमार उपाध्ये (पूर्व निदेशक, प्राकृत विद्यापीठ श्रवणबेलगोला), डॉ. जयकुमार जैन (अधिष्ठाता, श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर, जयपुर), डॉ. दीनानाथ शर्मा (गुजरात विश्वविद्यालय) तथा ब्र. सुमत भैया (अधिष्ठाता, निर्मल ध्यान केन्द्र, गिरनारजी) की गरिमामयी उपस्थिति रही। अतिथियों ने अपने संबोधनों में प्राकृत भाषा को भारतीय सांस्कृतिक चेतना की आत्मा बताते हुए इसके शैक्षणिक एवं सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला।

इस राष्ट्रीय विद्वत्संवाद में देश के 120 से अधिक विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विद्यालयों से पधारे संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के मर्मज्ञ, शोधार्थी एवं प्रतिष्ठित विद्वानों ने सक्रिय सहभागिता की। विभिन्न तकनीकी सत्रों में प्राकृत साहित्य, आगमिक परंपरा, भाषा वैज्ञानिक दृष्टि, दर्शन, संस्कृति तथा आधुनिक संदर्भों पर आधारित शोध-आलेखों का गहन वाचन एवं विमर्श हुआ। शैक्षणिक सत्रों का कुशल निर्देशन डॉ. धर्मेंद्र कुमार जैन, डॉ. प्रभात कुमार दास एवं डॉ. सतेंद्र जैन (केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय) द्वारा किया गया, जिससे संवाद का स्तर अत्यंत उच्च एवं सारगर्भित रहा। कार्यक्रम का संयोजन महामंत्री डॉ. आशीष जैन आचार्य (राष्ट्रपति सम्मानित) एवं डॉ. आशीष जैन बम्हौरी द्वारा किया गया।

समापन सत्र में प्राकृत भाषा विकास फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री ऋषभचन्द्र जैन फौजदार एवं महामंत्री डॉ. आशीष जैन आचार्य ने विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए संस्था द्वारा किए जा रहे प्राकृत भाषा के संरक्षण, प्रचार-प्रसार एवं अकादमिक प्रयासों की जानकारी दी। इस अवसर पर फाउंडेशन द्वारा प्राकृत भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले विद्वानों को प्राकृत प्रभावना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सम्मानित विद्वानों में डॉ. शैलेश जैन (उदयपुर), पंडित लोकेश शास्त्री (गनोड़ा), डॉ. निर्मल जैन (टीकमगढ़), पंडित धर्मेंद्र जैन शास्त्री (उदयपुर), विजय जैन शास्त्री (शाहगढ़), पंडित अनिल जैन शास्त्री (सागर) तथा श्रीमती सुरेखा संजय नरदे (महाराष्ट्र) सम्मिलित रहीं। कुल सात विद्वानों को सम्मानित कर प्राकृत भाषा-सेवा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई।

अधिवेशन के पुण्यार्जक श्रीमान् सौभाग्यमल राजेन्द्र कुमार जी कटारिया (अहमदाबाद) को विशेष रूप से उपाधि अलंकरण से सम्मानित किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम विद्वत्ता, साधना, संगठन और राष्ट्रीय चेतना का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरा। इस त्रिदिवसीय राष्ट्रीय प्राकृत भाषा विद्वत्संवाद ने प्राकृत भाषा को नई ऊर्जा, दिशा और राष्ट्रीय पहचान प्रदान की तथा भविष्य में ऐसे और व्यापक आयोजनों का मार्ग प्रशस्त किया।

आर्यिका सुयोग्यनंदिनी माताजी राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित

मुरैना/राजाखेड़ा (मनोज जैन नायक)। जैन साध्वी युग प्रवर्तक गणिनी आर्यिका श्रेष्ठ श्री सुयोग्य नंदिनी माताजी को राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जयपुर में आयोजित गरिमामई समारोह में उपस्थित सैकड़ों लोगों के समक्ष प्रसिद्ध जैन साध्वी गणिनी आर्यिका श्रेष्ठ श्री सौम्यनंदिनी माताजी की प्रथम परम प्रभावक शिष्या मनियां नगर गौरव जिनवाणी पुत्री गणिनी आर्यिका श्रेष्ठ श्री सुयोग्य नंदिनी माताजी को राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पूज्य माताजी की आज्ञानुसार रवि कुमार जैन आदित्य राजाखेड़ा द्वारा समारोह में उपस्थित होकर उक्त पुरस्कार प्राप्त किया। भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त वाई एस एस ग्रुप द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वायुसेना कैप्टन आर सी त्रिपाठी एवं कैप्टन मुकेश कुमार द्वारा पुरुस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रशस्ति पत्र गोल्ड मेडल एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान किया गया। इससे पूर्व भी माताजी को अनेकों उपाधियों से विभूषित किया जा चुका है। जिनमें युग प्रवर्तक, जिनवाणी पुत्री, आगम शिरोमणि प्रमुख हैं। पूज्य माताजी को राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार मिलने पर राजाखेड़ा, मनियां, धौलपुर सहित संपूर्ण जैन समाज में खुशी की लहर है।

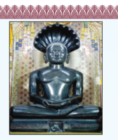
पारसनाथ भगवान

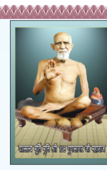

अनिल कुमार जैन (सिंघल)-श्रीमती सुनीता जैन कठमाना वाले फागी निवासी को शादी की 25वीं वैवाहिक वर्षगांठ 30 जनवरी 2026 पर मंगलमयी हार्दिक शुभकामनाएं

"आपका दाम्पत्य जीवन

सदा सुखी रहे"

आपने युवावस्था से आज तक समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए फागी कस्बे में लगातार तीन चातुर्मासों के अध्यक्ष रहकर सराहनीय कार्य कर धर्म लाभ प्राप्त किया है, आप विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी है, तथा आपकी धर्म पत्नी श्रीमती सुनीता जैन वर्तमान में फागी कस्बे के पार्श्वमति महिला मंडल की अध्यक्षा रहते हुए समाज सेवा का कार्य कर रही है।

श्री अनिल कुमार (सिंघल) जैन- श्रीमती सुनीता देवी जैन
(वैवाहिक वर्षगांठ 2001)

-: शुभाकांक्षी :-

रामअवतार-श्रीमती सुरज्ञानी देवी (माता-पिता)
गणेश-रेखा, मुकेश-नेहा, विनोद-शिखा (भाई- बहू)
अभिनव, अर्पित, रिषिका, प्रणव, आर्यन, मनन, परी, अनवी, टिमू (पुत्र-पुत्रियां) तथा महावीर प्रसाद, राम अवतार, नवरत्न, प्रेमचंद, दिलीप कुमार, विनोद कुमार सहित समस्त कठमाना वाले परिवारजन फागी, जिला-जयपुर-303005 (राजस्थान)

-: प्रतिष्ठान :-

अग्रसेन ट्रेडर्स बाबा किराना स्टोर, मेन मार्केट, फागी मो. 9784498154

संकलन - जैन गजट संवाददाता राजा बाबू गोधा, फागी, मो. 9460554501

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. मेरी उम्र 58 वर्ष है और परिवार के लिये कार्य करते-करते मैं थक गया हूँ और मुझे हमेशा बुराई ही मिलती है। - अमोलक जैन, बूंदी (राज.)

उत्तर - अमोलक जी, आपकी कुंडली में सूर्य कमजोर है जब कुंडली में सूर्य कमजोर होता है तो उस व्यक्ति को नेम-फेम नही मिलता। माणिक्य रत्न रविवार को धारण करें, लाभ होगा।

प्रश्न 2. दूसरे व्यक्ति की तरक्की को देखकर मुझे बहुत ईर्ष्या-जलन होती है, मैं अपने मन पर बहुत काबू रखना चाहता हूँ मगर फिर भी मेरा मन परेशान रहता है - सीताराम जैन, लुधियाना (पंजाब)

उत्तर - आपकी कुंडली में चन्द्रमा 8 नं. की राशि में बैठा होने के कारण नीच का हो गया है। मून स्टोन का लॉकेट सोमवार को धारण करें, साथ ही शाम के समय श्री चन्द्रप्रभु चालीसा हल्की आवाज में पढ़ें।

प्रश्न 3. नौकरी में बाधा आ रही है। श्री भक्तामर जी का कौन सा काव्य पढ़ना चाहिये - शैली, शारदा, दिल्ली

उत्तर - शैली जी, श्री भक्तामर जी का 28वां काव्य नौकरी, व्यापार से सम्बन्धित होता है, अवश्य पढ़ें।

प्रश्न 4. क्या मेरी कुंडली में चाण्डाल दोष है? उसकी शान्ति किस प्रकार होती है - पदम जैन, मुम्बई

उत्तर - आपकी कुंडली में गुरू और राहु एक साथ होने के कारण चाण्डाल दोष है। अच्छे विधानाचार्य से इस दोष की शान्ति करायें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र- 9990402062, 826755078

आज का राशिफल
आदिनाथ
प्रतिदिन, प्रातः 05:35 बजे
पुनः प्रसारण प्रातः 10:15 बजे

जैन ज्योतिषाचार्य
रवि जैन गुरुजी
संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद (पंजी.)
सम्पर्क सूत्र
9990402062, 8826755078
पता- 1/6991, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली-32
आदिनाथ टीवी
TATA PLAY #1086 #1217 airtel #700 #628 #694 #478 #882 #514 Jio TV #1086
अन्य सभी केबल्स पर भी उपलब्ध

निस्वार्थ, बहुआयामी व्यक्तित्व अशोक पाण्डे का देवलोक गमन

महावीर ठोले

''जातस्य ध्रुवं मृत्युं'' - अर्थात जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है। किंतु जो व्यक्ति समाज, परिवार एवं धर्मक्षेत्र के उत्थान हेतु निस्वार्थ भाव से अपने जीवन का प्रत्येक क्षण समर्पित करता है, वह देह त्याग कर भी अमरता को प्राप्त कर लेता है।

ऐसा ही एक बहुआयामी, प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय व्यक्तित्व स्व. अशोक केशरचंद जी पाण्डे (चापानेर वाले) दिनांक 21 जनवरी 2026 को इस नश्वर संसार से विदा होकर देवलोकगामी हुए। वे 74 वर्ष के थे। स्व. अशोक जी अत्यंत अनुशासित, संयमनिष्ठ, कर्मठ, सिद्धांतप्रिय, मुनिभक्त एवं धर्मपरायण व्यक्तित्व थे। नित्य नियम से पूजा-अभिषेक करना, त्यागी संतों की वैय्यावृत्ति करना तथा परोपकार को जीवन का परम लक्ष्य मानना उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग था। उनका जीवन-मंत्र था - ''इस जीवन में जहाँ तक संभव हो, औरों का उपकार करूँ।''

इसी भाव भूमि ने उन्हें विसंगतिपूर्ण पारिवारिक स्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने, द्वार पर आए हर जरूरतमंद को नई दिशा देने, उचित मार्गदर्शन एवं आर्थिक संबल प्रदान करने की प्रेरणा दी। वे हर क्षण मानवीय करुणा, सेवा और सहानुभूति की पुनीत भावना को अपने दामन में संजोए रखते थे। उनके इसी सेवा-संकल्प को निरंतर बनाए रखने हेतु उनके तीनों सुसंस्कारित पुत्र अमोल, आतिश, चेतन एवं धर्मपत्नी श्रीमती अनीता पाण्डे ने उनके मरणोपरांत विभिन्न तीर्थक्षेत्रों, धार्मिक संस्थाओं एवं मंदिरों को विशाल दान राशि अर्पित करने की घोषणा की है। इसके अतिरिक्त, स्व. पिताजी के सेवा-कार्यों को अविरत रूप से संचालित करने हेतु एक विशाल सहायता-कोष की स्थापना भी की गई है इस सहायता कोष के अंतर्गत पाँच अल्प भूधारक किसानों को निःशुल्क कृषि साहित्य, संभाग में निवासरत पाँच असहाय रोगियों के उपचार हेतु आर्थिक सहयोग, पाँच असमर्थ मेधावी छात्रों को पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल, एलोरा में कक्षा 5वीं से 10वीं तक शिक्षा हेतु आर्थिक सहायता, परिवार-संबंधित निराधार व्यक्तियों को आर्थिक संबल, जैन विद्यालयों में विविध शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक स्पर्धाओं का आयोजन कर अशोक जी की पुण्यतिथि के अवसर पर पुरस्कार वितरण किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि स्व. अशोक जी के चाचाजी श्री वर्धमान जी पाण्डे, श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा, महाराष्ट्र प्रांत के अध्यक्ष हैं। तीर्थ संरक्षिणी महासभा लखनऊ को रू. 7,500 तथा जैन गजट पत्रिका को रू. 1,100 की सहयोग राशि अर्पित की गई है, साथ ही जैन गजट की आजीवन सदस्यता भी ग्रहण की गई है। इस अवसर पर श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा, महाराष्ट्र प्रांत की ओर से महामंत्री महावीर दीपचंद ठोले ने स्व. अशोक पाण्डे जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। निस्संदेह स्व. अशोक पाण्डे जी का जीवन सेवा, समर्पण, संयम और करुणा का अनुपम आदर्श है। उनका पुण्य स्मरण भावी पीढ़ियों को धर्म, मानवता और सामाजिक उत्तरदायित्व के मार्ग पर अग्रसर करता रहेगा।

दुखद सूचना

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि श्रीमान अशोक कुमार जी जैन (पप्पू जी) श्री बिमल कुमार जी जैन निवासी पालम विहार गुरुग्राम (महासभा) के छोटे भाई-फिरोजाबाद वाले 61 वर्ष (सुपुत्र स्व. ग्रीषेन्द्र कुमार जी जैन) का दि. 23.01.26 वार शुक्रवार को प्रातः 3:00 बजे गुवाहाटी में स्वर्गवास हो गया है। श्री दिगम्बर जैन समाज, डीमापुर स्व. अशोक कुमार जी जैन को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना करती है की हे प्रभु ! दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शीघ्र अति शीघ्र पंचम गति की प्राप्ति हो तथा गम की इस घड़ी में सभी परिवारजनों को धैर्य धारण करने और इस विकट दुख को सहन करने की भी शक्ति प्रदान करें। - अनील सेठी (अध्यक्ष), भागचंद बिलाला (मंत्री), श्री दिगम्बर जैन समाज, डिमापुर

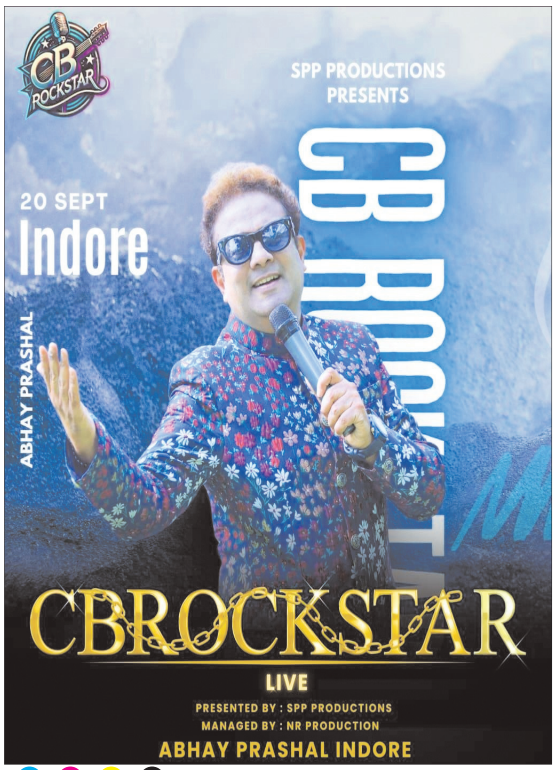

धनी तो वो ही हैं, जिसके पास तीन रत्न हैं जिसे रत्नत्रय कहते हैं

हार जीत हमारी नहीं उदय के द्वारा संयोग की होती है

तकलीफ से रिलीफ चाहते हो तो आत्मा पर बिलीफ करो

सर्वज्ञ की आज्ञा है कि अपने को सर्वज्ञ देखो तो हित होगा

DR. FIXIT WATERPROOFING EXPERT
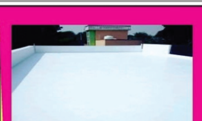

Dolphin Waterproofing
For Your New & Old Construction
आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें, सीलन, लीकेज व गर्मी से राहत एवं बिजली के बिल मे भारी बचत करें।
छत व दीवारों का बिना तोडफोड के सीलन का निवारण
Rajendra Jain
Dr. Fixit Authorised Project Applicator 80036-14691
116/183 Agarwal Farm opp. D Mart Mansoravar Jaipur

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उ० प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000

महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985

कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर (प्रति वर्ष) अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

मुनिश्री विश्वविजय सागर जी महाराज ने किया विहार

विहार के दौरान उदास हुए भक्त, 2 दिन का अग्रसेन नगर में रहा प्रवास

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

मदनगंज किशनगढ़। परम पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य पूज्य मुनि श्री 108 विश्व विजय सागर जी महाराज ने अग्रसेन नगर स्थित श्री शांतिनाथ जिनालय से दोपहर 1:00 बजे अजमेर के लिए विहार किया। अग्रसेन नगर जैन समाज अध्यक्ष निर्मल सोगानी ने बताया कि महाराज जी के आगमन से विहार तक धर्म की खूब प्रभावना हुई। कॉलोनी में भक्तिमय माहौल रहा, छोटे बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक ने सायंकालीन आनंद यात्रा, आरती एवं प्रवचन के दौरान कॉलोनी वासियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। ट्रस्टी गौरव पाटनी ने बताया कि मुनि संघ सेवा समिति अजमेर के अध्यक्ष सुशील बाकलीवाल, पदम चन्द सोगानी, ललित पाण्ड्या, पवन जैन, मनोज सेठी ने श्रीफल भेंटकर अजमेर प्रवास हेतु निवेदन किया और विहार में साथ चले पाटनी ने बताया कि विहार के दौरान कॉलोनी में जैन समाज के लोगों ने रास्ते में मुनि श्री के पाद-प्रक्षालन कर आरती की। मुनि श्री ने गगवाना के पास कोठरी फार्म हाउस पर रात्रि विश्राम किया। इस दौरान कॉलोनी के महेश अजमेरा, सुनील बाकलीवाल, राजेश पाटनी, राजेश पांड्या, विकास सेठी, गजेंद्र पाटनी, विजय सेठी, प्रेम देवी बाकलीवाल, आशा पाटनी, रेखा बाकलीवाल, रेनू सोगानी, बीना अजमेरा, श्वेता पाटनी, मधु पलीवाल, वर्षा गंगवाल, प्रिय पाटनी, नीलू सोगानी, राजकुमारी बाकलीवाल, अर्चना जैन, चित्रा पाटनी सहित अनेक भक्त थे और सभी का भरपूर सहयोग रहा।

तीर्थ सुरक्षित हैं तो धर्म सुरक्षित, धर्म सुरक्षित है तो समाज सुरक्षित है : उपाध्याय पियूष सागर जी

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

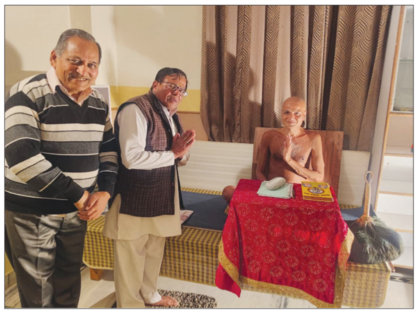

29 जनवरी। जयपुर श्री त्रिलोक और शोध संस्थान जम्बूद्वीप हस्तिनापुर के अंतर्गत अनेक तीर्थक्षेत्र, तीर्थकरों की जन्म भूमि, कुंडलपुर, अयोध्या, मांगीतुंगी, हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्रों का विकास पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्र कीर्ति स्वामी जी की देखरेख में बड़े ही सुंदर तरीके से हुए हैं, इस संबंध में परम पूज्य अन्तर्मना प्रसन्न सागर जी महाराज के संघस्थ उपाध्याय श्री पीयूष सागर जी महाराज ने अपने उद्बोधन में गायत्री नगर स्थित आदिनाथ भवन में प्रकट किए। उन्होंने कहा कि तीर्थों का संरक्षण, विकास और सही समय पर पूर्ण करना हो तो परम पूज्या गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया जाए। प्रज्ञाश्रमणी श्री चंदनामती माताजी का मार्गदर्शन प्राप्त किया जाए और स्वस्ति श्री रवीन्द्र कीर्ति स्वामी जी का प्रबन्धन, सहयोग प्राप्त किया जाए और उनकी देखरेख में विकास कार्य करवाये जायें जाए। कार्यक्रम में उपाध्याय श्री ने कहा कि तीर्थ सुरक्षित हैं तो धर्म सुरक्षित है, धर्म सुरक्षित है तो समाज सुरक्षित है। समाज सुरक्षित है तो व्यक्ति सुरक्षित है। तीर्थों की सुरक्षा में श्रेष्ठी, समाज व युवा अपना योगदान जरुर जरूर देवें, इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन जयपुर, जैन गजट के राष्ट्रीय संवाददाता राजा बाबू गोधा फागी, ज्ञान मति दीक्षा स्थली माधोराजपुरा के संतोष रांवका, गायत्री नगर मंदिर समिति के अध्यक्ष कैलाश छाबड़ा, अरुण शाह, एडवोकेट विमल बाकलीवाल आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

रूस की प्रख्यात प्राकृत विद्वान का महासभा कार्यालय में भव्य स्वागत

स्वराज जैन

दिल्ली। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के कार्यालय में प्राकृत भाषा की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विदुषी, सोवियत संघ के इंस्टिट्यूट ऑफ ओरियंटल स्टडीज एवं रशियन एकेडमी ऑफ साइंसेज के प्राकृत विभाग की प्राध्यापक डॉ. नतालिया झेलेजनोवा (Dr. Natalia Zheleznova) का गरिमामय पदार्पण हुआ। इस अवसर पर उनके साथ डॉ. (विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक) एवं प्रख्यात विद्वान डॉ. एम. एल. जैन भी उपस्थित रहे। डॉ. नतालिया झेलेजनोवा विगत कई वर्षों से मॉस्को स्थित रशियन एकेडमी ऑफ साइंसेज में प्राकृत भाषा के अध्यापन एवं शोध कार्य में संलग्न हैं तथा जैन आगम, प्राकृत साहित्य और भारतीय दर्शन पर उनका गहन अध्ययन रहा है। यह विशेष उल्लेखनीय है कि डॉ. नतालिया झेलेजनोवा शुद्ध शाकाहारी जीवनशैली का पालन करती हैं तथा रात्रि में भोजन नहीं करतीं। वे दिगम्बर जैन परम्परा से गहरे रूप से प्रभावित हैं और दिगम्बर आचार्यों को अपने आराध्य मानती हैं। श्रवणबेलगोला में सम्पन्न गत महामस्तकाभिषेक समारोह में भी उन्होंने सक्रिय सहभागिता निभाई थी। महासभा कार्यालय में उनके आगमन पर महासभा के पदाधिकारियों द्वारा पटका पहना कर एवं माल्यार्पण कर उनका स्नेह पूर्ण एवं सम्मान पूर्वक स्वागत किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी जनों ने प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार एवं जैन दर्शन के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे अध्ययन हेतु उनके योगदान की सराहना की। यह भेंट जैन संस्कृति, प्राकृत भाषा एवं वैश्विक बौद्धिक संवाद के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी क्षण के रूप में स्मरणीय रही।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट के परम सम्मानित ट्रस्टी श्री अजीत कुमार विमला देवी जैन पांड्या जी की

स्वर्ण जयंती विवाह वर्षगांठ भव्यता के साथ कोलकाता में मनाई गई

स्वराज जैन, दिल्ली

कोलकाता। श्री अजीत - विमला देवी जैन पांड्या जी की 50वीं विवाह वर्षगांठ (स्वर्ण जयंती) का आयोजन अत्यंत भव्य, गरिमामय एवं हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में धूमधाम से संपन्न हुआ। इस ऐतिहासिक एवं पुण्य अवसर पर परिवारजनों, इष्ट-मित्रों, समाजबंधुओं एवं महासभा के वरिष्ठ पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति ने समारोह को यादगार बना दिया।

कार्यक्रम में श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी, महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा जी, तीर्थ संरक्षिणी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार सेठी जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी महासभा के अशोक चूड़ीवाल जी, धर्म संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ललित जैन सरावगी जी सहित महासभा के अनेक ट्रस्टी, राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारीगण विशेष रूप से उपस्थित रहे। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्री अजीत कुमार जैन पांड्या एवं श्रीमती विमला देवी जैन पांड्या जी का 50 वर्षों का वैवाहिक जीवन संयम, संस्कार, समर्पण और आपसी विश्वास का अनुपम उदाहरण है। आज के समय में ऐसा दीर्घ और सफल दांपत्य जीवन समाज के लिए प्रेरणादायी है। मैं जिनेंद्र भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि यह दंपत्ति उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के साथ इसी प्रकार समाज और परिवार को मार्गदर्शन देते रहें। इस अवसर पर महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री आदरणीय श्री पवन जैन गोधा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री अजीत कुमार जैन पांड्या एवं श्रीमती विमला देवी जैन पांड्या जी का स्वर्णिम वैवाहिक जीवन पारिवारिक मूल्यों, आपसी सहयोग और संस्कारों की सशक्त मिसाल है। आज की पीढ़ी के लिए यह दांपत्य जीवन प्रेरणास्रोत है। मैं दोनों को इस गौरवशाली उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। सभी अतिथियों ने स्वर्ण जयंती दंपत्ति को दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य एवं सुखद वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएँ प्रदान कीं। वक्ताओं ने अपने संबोधन में कहा कि श्री अजीत कुमार जैन पांड्या एवं श्रीमती विमला देवी जैन पांड्या जी का 50 वर्षों का वैवाहिक जीवन आपसी समर्पण, संस्कार, सहयोग और पारिवारिक मूल्यों का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। समारोह के दौरान मंगलाचरण, सम्मान एवं अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किए गए। संपूर्ण आयोजन श्रद्धा, स्नेह और आत्मीयता से परिपूर्ण रहा। अंत में स्नेह भोज के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ।

लेखक एम. सी. जैन को 'काव्य प्रदीप सम्मान' प्रदान

सुविख्यात समाज सेवी, मराठी-हिंदी लेखक एम. सी. जैन को लोकप्रिय हिदी कवितायें संग्रह में उत्कृष्ट रचनात्मक भाव पूर्ण काव्य के लिए इंकलाब पब्लिकेशन, डोंबिवली, ठाणे की ओर से 'काव्य प्रदीप सम्मान' से सम्मानित किया गया तथा 225 पृष्ठ का 'हिंदी कविताएं-काव्य संग्रह' भेंट स्वरुप दिए। इस काव्य संग्रह में एम. सी.जैन सा. की दो कविताएं प्रकाशित की गई 'क्या था, क्या हुआ?', 'सदमा' दो कविताओं को स्थान मिला तथा सर्वोत्तम, भावपूर्ण कविता सावित हुई। पत्रकार एम.सी. जैन का सर्वत्र अभिनंदन हो रहा।

मुक्तागिरि में आचार्यश्री समय सागरजी ससंघ

पूज्य आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महाराज की तप-साधना स्थली कहा जाने वाला श्री मुक्तागिरि क्षेत्र परम्पराचार्य श्री समयसागर जी महाराज की अगवानी का साक्षी बना। प्राकृतिक छटा के बीच स्थित इस तीर्थ पर देश भर के कई अंचलों से हजारों लोग अपने गुरुदेव के दर्शन एवं पलक पावड़े बिछाये उनकी अगवानी में शामिल हेतु पहुंचे। यहां स्थानीय जैन समाज न के बराबर होने के बाबजूद अगवानी के समय जबरदस्त सैलाब देखने मिला।

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।